॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न ॥

संगीत तत्वदर्शक.

भाग १.

संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक.

श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्युझिक, प्रिन्सिपाल,

गांधर्व महा विद्यालय—बंबई द्वारा रचित

सन १९२१.

चतुर्थावृत्ति प्रती २००० मुल्य ८ आना

"गांधर्व महा विद्यालय" प्रेस, सेंडहर्स्ट रोड, बंबई

समर्पण.

श्रीमंत बाळासाहेब,

चीफ ऑफ मिरज, के. सी. आय. ई.

जो कि कई एक विद्याओंके अतिरिक्त संगीत विद्यामें पूर्ण विद्वान् हैं और जिन्होंने मुझे इस विद्याके सीखनेमें पूर्ण सहायता देकर गुणग्राहकता का परिचय दिया है. की सेवामें इस पुस्तकको मैं बडे नम्र और प्रेमभावसे समर्पण करता हूं.

विष्णु दिगंबर.

अनुक्रमणिका.

नंबर.		पृष्ठ.
१	गानेवालोंको उपयुक्त सूचना	१—२
२	गायन दोष	२—५
३	गायन गुण	६—९
४	संगीतका अर्थ और सप्तस्वरोंका वर्णन ...	१०-११
५	सातोंके नाम और गायन लेखनरीति ...	११-१२
६	आरोह, अवरोह और स्वरोंके भेद	१३-१५
७	चतस्रजाति लयकारी	१६-२६
८	तिस्रजाति लयकारी	२७-३१
९	तालका नक्शा और ब्यान	३१-३२
१०	रागके छे किसम	३३-३४
११	अंकनरीति पढनेकी रीति	३४-३४
१२	मूर्छनाका वर्णन	३४-३५
१३	आर्चिक, गाथिक	३५-३६
१४	शुद्ध और कोमल स्वर	३७-५०
१५	गमकका वर्णन...	५१-५२

प्रस्तावनिका.

प्रथमावृत्ति.

इस पुस्तक के बनाने का मुख्य उद्देश यह है कि हमारी प्राचीन ऋषि प्रणीत संगीत विद्या जो दिन प्रति दिन लोप होती जाती है उसको, फिर न गया जावे. इस विद्यासे महर्षि लोग अपने मनुष्यत्व का पूर्ण लाभ लेनेके लिये सामवेदके गानद्वारा परमात्मा को प्रसन्न कर, उसकी कृपासे सहज मात्र में पाकर अपार भवसागर का सुखसे उल्लंघन कर जाते थे जिस विद्याका प्रभाव, न केवल देवता, और मनुष्यपरही था किंतु सब प्राणी मात्रपर ऐसा; विशाल था कि अचरको चर और चरको अचर बनानेके लिये चमत्कार दरसाया करता था, जो विद्या अपने प्रभावसे प्रकृति देवीकोभी अपने नियमित कार्य के करनेमें विपरीत कर देती थी क्योंकि, उक्त विद्या अत्यंत दुःखं शोकमें मग्न पुरुषकोभी ऐसे आनंद समुद्रमें प्लावित कर उसके सब दुःखोंको विनाश कर, ऐसे सुखको अनुभव कराती थी, जिस सुखको उत्पन्न करनेके लिये संसारिक सर्व साधन अकिंचित है. ऐसी गुणवती महा विद्याका आजकलके समयमें दिन प्रति दिन इस भारत वर्षसे लोप होता जाता है. और उच्चकुल संभूत सज्जन लोगोंको इस विद्यासे अरुचि होता जाता है और इस विद्याकी अवनतिका कारण जहांतक मैंने सोचा है यह प्रतीत होता है कि गाना लिखनेकी रीति जो हमारे देशके उन्नत समयमें प्रचलित थी उसकी विपरीत गतीके कारण भारतसे लोप हो गई. और इसके लोप होनेसे गानेकी सुगमता और प्राचीन संगीत आचार्यों की गायन शैलिभी मानवी जाती रही. इसवास्ते जो कुछ गानेवाले इस समयमें मिलते हैं उनको भी सिखानेमें अति कठिनता पडती है. इन सब कठिनताओं को दूर करनेके लिये और प्राचीन

रीति की विद्या को जगानेके लिये हमने नई असन रीति (गाना लिखनेका कायदा) निकाली है जिसके जरियेसे सिखलानेमें और सीखनेमें भी आसानी होता जाता है जिसका अनुभव आज बारा साल होनेको आये हमने और गांधर्व महा विद्यालयके विद्यार्थीयोंने करके देखा है इससे हम कह सकते है कि अगर ये अक्र रीति सब भारतमें प्रचलित हो जाय तो फिर इस विद्याका पुनर्जीवन जरूरही होगा

इस नवन रीतिके चिन्होंका बयान अबतक हमारे यहाके **संगीत बालबोध** प्रथम भागमें था, परंतु अब इसका बयान और संगीत शास्त्रीय विषयोंका बयान ये सब विषय क्रमसे इसी पुस्तकके भागोंमें दाये जावेंगे इस वास्ते इस पुस्तकका नाम **संगीत तत्वदर्शक** रखा है इसके औरभी भाग बनाये जावेंगे.

अतमें अपने गुरु श्रीमान् गायनाचार्य **पं. बाळकृष्ण बोवाका** कोटि २ धन्यवाद करता हू कारण उनहीके शुद्ध अत करणसे यह विद्या मुझको प्राप्त हुई है

चतुर्थावृति.

इस **संगीत तत्वदर्शक** पुस्तककी तृतीय वृति समाप्त होनेसे यह चतुर्थावृति प्रकाशित करनेका समय ईश्वरकी कृपासे हमको मिला, इसलिये **हम** सच्चिदानंदका कोटी २ धन्यवाद करते हैं.

॥ शुभम् ॥

आपका,

विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

संगीत तत्वदर्शक.

गानेवालोंके लिये उपयुक्त सूचना

(१) प्रथम हरएक गानेवाले को चाहिये कि, वह अपने ब्रह्मचर्य का अच्छी तरह पालन करे कारण की ब्रह्मचर्य अच्छा होनेसे वीर्यमें कोई बिगाड नहीं होने पाता जब वीर्य अच्छा हुआ तो तन्दुरस्ती भी आपही अच्छी रहती है, तन्दुरुस्ती अच्छी होनेसे बुद्धि निर्मल हो जाती है और शरीर में हरएक प्रकारका बल प्राप्त होता है. और बल होनेसे हरएक कामना सिद्ध होती है अतएव हरएक गानेवाले को सबसे पहिले अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करनी उचित है जिससे गान में मधुरता आवे और स्वरों को मन्द्र, मध्य और तार सप्तकों में चाहे जहां उतारने और चढाने में सब तरहका सुभीता हो और ध्यान में भी किसी तरहका बोझ न रहे.

(२) आजकल के प्राय जितने गानेवाले है जहां गान करनेका समय आया, कुछ ना कुछ अपना गला बिगडनेका कारण बताही देते है परन्तु वास्तवमें उनमे से बहुत दुर्व्यसनी

ओर दुराचारी होते है इस कारण उनके विकार कभी कम नही होते यदि वह लोग अपने आचरणों को शुद्ध रक्खे तो गानमें उनको किसी प्रकारकी व्याधि भी पीडित न करेगी.

(३) इसलिये गान करनेवालो को हरएक दुर्व्यसन से बचना चाहिये क्योंकि दुर्व्यसन में पडनेसे आवाज में विकार उत्पन्न होता है

(४) खानेमेंभी ऐसी चीजे नही खानी चाहिये जिनसे कफ बढे या शुष्कता उत्पन्न हो एकहि समय ठंडी और गरम चीज नहीं खानी चाहिये क्योंकि ऐसा करनेसे सरदी गरमी होकर अवाज बिगड जाती है तात्पर्य यह है कि जिन चीजोंमे आरोग्यतामें थोडा भी विघ्न पडे ऐसी चीजोंसे दूर रहिनाही श्रेष्ट है.

(५) गानविद्याभिलाषियों को इस बातपरभी ध्यान देना चाहिये कि यह सर्वकाल मधुरता और शुद्धता से बोलें क्यों कि बहुत जोरसे और खेचके बात करनेसे भी आवाज दोषयुक्त होता है और गानेवाले की वृत्तिभी सात्वीक होनी चाहिये.

गायन दोष.

प्रथम हरएक गायक को इस बातका विचार करना चाहिये

कि किसी तरहसे अपने गानमें किसी किसम का दोष न होवे, क्योंकि गाय गानेवालों में गाते समय बहुतसी खराब आदतें लगा हुई देखनेमें आती है सो उन खराब आदतों से बचनेका गान सीखनेवाला को ख्याल रखना जरूरी है

अब गानमें जो दोष आते हैं उनको लिखते हैं नारदमुनि कहते हैं

श्लोक—कंपित भीत मुद्‌घृष्टमव्यक्तमनुनासिकम् ॥
काकस्वर शीर्षगत तथा स्थान निवर्जितम् ॥
विस्वर विरसंचैव विश्लिष्ट विषमाहतम् ॥
व्याकुल तालहीनश्च गातुर्दोषाश्चतुर्दश ॥

अर्थ—१ कंपित याने गाते समय स्वर हिलता रहे, २ भीत रीतिसे गाना, ३ उद्‌घृष्ट रीतिसे गाना, ४ अव्यक्त, याने वर्णोच्चारण ठीक न होना, ५ नाकमेंसे अवाज निकालना, ६ काकस्वरम गाना, ७ अति उंचे स्वर मे गाना, ८ स्वरको अपनी २ जगहपर न लगाना, ९ दुसरे स्वर लगाना, १० अरसिक गाना, ११ बेहुदा मे गाना, १२ नफरतके वगैरे स्वरको धक्का देना, १३ व्याकुल रीतिसे गाना, १४ बेताल याने तालरहित गाना

हमारे महर्षियोंके मतमें और भी दोष माने गये हैं सो उनकोभी लिखते हैं. १ सद्दष्ट, २ सूतकारी, ३ करारी, ४ धरम, ५ उद्‌भट, ६ मोरद, ७ तुंबकी, ८ वक्री ९ प्रसारी १० निमी

लक, ११ अनवस्थित, १२ मिश्रक, १३ अनवधान, इन दोषोंसे वर्जित गान होना चाहिये, उनके अलग, २, अर्थ यह है.

१ संदृष्ट वह है, जो रसहीन और दांतसे दबाकर शब्दका ऊच्चार है.

२ सूतकारी दोष उसको कहना चाहिये, कि बारबार सूत्कार शब्द निकले.

३ कराली दोष उसका नाम है जिसमें चेहरा गाते समय भयानक नजर आवे.

४ करभ दोष वह है जो गाते समय शिर झुकाके कंधेपर कपोल धरके या गालपर या कानपर हात रखके गाना.

५ उदुघट वह है जो गाते समय बकरे के सदृश स्वरका उच्चारण करना.

६ जोंबक दोष वह है कि गाते समय चेहरेकी नसें खडी हो जावे.

७ तुंबकी वह है कि तुंबेके सदृश गला फूलके गाया जावे.

८ वक्री वह है जो गाते समय कंठको टेढा करके गान किया जावे.

९ प्रसारी वह है जो गात्रोंको फुलाके गाना होवे.

१० निमीलक वह है जो गाते समय नेत्र मिट जावे.

११ अनवस्थित वह है जिसमें १ मूलाधार, २ अनाहत ३ ब्रह्मरंध्र इन तीन स्थानोंका बोध न हो।

१२ मिश्रक वह है जिस रागमें जो स्वर लगने चाहिये उनके अतिरिक्त दूसरे स्वरभी लगे.

१३ अवधान वह है जो स्थाई आदि अलंकारको क्रमसे न किया जावे और चित्त व्यग्र होवे.

ऊपर लिखेहुए दोषोंके अलावा जो आजकलके समयमें प्रायः बहुतसे गानेवालोंमें फैलाहुआ एक बड़ा भारी दोष है कि, जिसके जरीयेसे जो हमारी प्राचीन विद्या आला दर्जेपर पहुंची थी उसका गिरना शुरू हुआ इसका कारण अगर देखीं जाय तो यहि मालूम होता है कि जिसको अंध परंपरा कहते है.

अंध परंपरा उसको कहिना चाहिये कि जिसको स्वर शास्त्रका पूर्ण ज्ञान नही हुआ होगा याने जो स्वरोंको (थिअरीको प्रॅक्टिकली) नही जानता होगा, या जिन्होंने संगीत शास्त्रको पढा नहीं होगा, और ध्रुपद, ख्याल, ठुंबरी, टप्पा, गजल, इनके अक्षरके स्वर दूसरेके गलेकी नकलसे सीखकर गाना याने कोई नोटेशनके सिस्टीम वगैर सीखना इसीका नाम अंध परंपरा दोष है और इसीके सेवनसे गानेवालों की इस समयपर कोई कदर रही नहीं

कारण प्राचीन समयमें हमारे ऋषि लोग कोई बात भिअगीके व-
गैर याने शास्त्रके वगैर किसी विद्याको पढाते नही थे और पढने-
भी नही थे और हरएक विद्या नोटेशन सिस्टिमपर सिखाया क
रते थे और सीखतेभी थे मसलन सामवेद को जब पढते थे तब
सामवेद के गानका नोटशन पढने को सिखते थे इसी वास्ते उ-
स समयमें इस विद्याकी बडी भारी कदर थी, अब गानेवालों में
आगे लिखेहुए गुणों की बडी भारी आवश्यकता है नारदीय शि-
क्षाका कथन है.

गायनगुण.

गायमस्य तु दशविधा गुणवृत्तिस्तयथा, रक्त पूर्ण अलंकृतं, प्रसन्नं
व्यक्तं, विकुष्टं, श्लक्ष्णं, समं सुकुमार मधुरमितिगुण

१ तत्र रक्तं नाम वेणु वीणा स्वराणामेकीभावे रक्तमित्युच्यते.

२ पूर्ण नाम स्वरश्रुतिपूरणाच्छंद पादाक्षरसंयोगात् पूर्ण मित्युच्यते.

३ अलकृतं नामोरसिशिरसि कंठयुक्तमित्यलंकृतं

४ प्रसन्न नामापगतगद्गद निर्विशंकं प्रसन्नमित्युच्यते.

५ व्यक्त नाम पदपदार्थ प्रकृति विकारागमलोपकृत्तद्धित समासधातुनि-
पातोपसर्गस्वरलिंग वृत्तिवार्तिक विभक्त्यर्थ वचनानां सम्यगुपपादनं व्य-
क्तमित्युच्यते.

६ विकुष्टं नामोच्चैरुच्चारितं व्यक्त पदाक्षरमिति विकुष्टं

७ श्लक्ष्णं नामानुमभविकवित उच्च नीच स्वर समाहारं हेल सादो
पनयादिभिरुपपादमानैभि. श्लक्ष्णमित्युच्यते

८ समं नामावाप निर्वाप प्रदेश प्रत्यन्तरस्थानानां समाहार समभि-
त्युच्यते.

९ सुकुमारं नाम मृदुपदवर्णस्वरकुहरणयुक्तं सुकुमार मित्युच्यते

१० मधुरं नाम स्वरभावोपनीत ललित पादाक्षर गुण समृद्धं मधुर-
मित्युच्यते.

एवमेतैर्दशभिर्गुणैर्युक्तं गान भवति ऋत्विग्त्वाप लोक

ऊपर लिखे हुये दशगुणोंका अलग अलग भावार्थ कहते हैं.

१ रक्तं—इसका मतलब यह है, कि वेणुवीणा इन दोनोंका स्वर एक करना इसका भावार्थ यह है कि हर एक गानेवाले को गाना शुरू करनेके पहिले जितने वाद्यों की अवश्यकता लगती है उन वाद्यों को स्वरों में ठीक मिलाना चाहिये, जबतक सब वाद्य स्वरोंमें न मिलेंगे तबतक गाना शुरू नहीं करना चाहिये.

२ पूर्ण—इसका मतलब यह है, कि स्वर श्रुती, छंद, पादाक्षर, इनको ठीक रीतिसे कहा जावे याने हर एक स्वर अपने अपने जगहपर ठीक लगाना चाहिये और पद अक्षरका मेल ठीक रहिना चाहिये.

३ अलंकृतं—इसका तात्पर्य यह है कि उर, शिर और कंठ इन स्थानोंपर आवाजका ठीक २ उच्चारण होना चाहिये.

४ प्रसन्नं—इसका मतलब यह है, कि आवाजमें गंभीरता और शंका रहित आवाजको चलना चाहिये.

५ व्यक्तं—का मतलब यह है, कि जो कोई गाने वाली चीज या श्लोक या कोई वेदका मंत्र होगा, उसमें पद पदार्थ याने पदोंका ठीक ठीक अर्थ होवे और विभक्ति, समास वचन यानें जो कोई गाना होगा उसमें अर्थ ठीक होवे और व्याकरणभी ठीक होवे.

६ विकुष्टं—का मतलब यह है, कि तार सप्तकके स्वरोंमें जो अक्षर कहा जावेगा उसका उच्चारण स्पष्ट होना चाहिये.

श्लक्ष्णं–का मतलब यह है. कि द्रुत, विलंबित, और मध्य जो लयकारी है उसमें प्रवीणता होना चाहिये और उदात्त, अनुदात्त, स्वरोंका अच्छी तरहसे ज्ञान होना चाहिये उन पदोंपर जोर ठीक आना चाहिये.

८ समं–का मतलब यह है, कि जहां जहां पर समास बनते होंगे वहां पर ठीक सम आना चाहिये.

९ सुकुमारं–का मतलब यह है. कि मृदु वर्णमें स्वर जहां आवेंगे वहां उनका मृदुताके साथ उच्चारण होना चाहिये

१० मधुरं–का तात्पर्य यह है, कि गानेमें स्वर वर्ण पद जो कुछ आवेंगे वो मधुर होना चाहिये, यानें कानको आनन्द देने वाले होवें औरभी हमारे ऋषियोंका ऐसा मत है

श्लोक-सुस्वर सुरसंचैव सुरागमधुराक्षरम्।
सालंकार प्रमाण च षड्विध गीतलक्षणम्॥

ऊपर लिखेहुए गुणोंके अलावा औरभी गुण गाने वालोंमे होने अवश्य है, सभाजीतपना राग द्वेष रहितता, नवीन युक्तीमें प्रवीणता, गानेमें धीरता, और यथा लाभमें सन्तुष्टता, ऊपर लिखे हुवे सब गुण ग्रहण किया हुवा जो गानेवाला होगा उसके गानसे उसको नाद विद्याका पूर्ण ज्ञान हो सकता है और सब सुखको अनुभव करता हुवा नाद योगका साधन करते करते अपार भवसागरसे सहजहीं पार हो जाता है और ऐसा जो गाना करनेवालेकी भी चित्तवृत्ति पवित्र बन जाती है और ऐसा जो गाना है उसको ऋषि लोक देवतुल्य गाना

पढ़ते हैं और ऐसाही गाना हमारे ऋषियोंके मतमें परमात्मा को प्रसन्न करता है.

इसके विपरीत गाना करनेवाले लोगोंके लक्षण बहुधा जितने गानेवाले होते हैं वाह द्रव्य लोलुप होकर निर्लज्जताको धारण करके खुशामदताकी मंडपना करते हुए मिथ्यावादी बनके, निरादर भोगते हुवे और सुननेवालोंको भी अपवित्र बनाते हुए नाक के भंगी बनते हैं, इसी वास्ते हर एक गानेवालोंने गुणको ग्रहण करते हुए अवगुणको छोड़ना चाहिये, ताके इस लोकमें और परलोकमें हित होगा

प्रथम प्रत्येक मनुष्य मात्रको इस बातका विचार करना चाहिये कि उसका आयुष्य किस रीतिसे आनंदमें व्यतीत होगा, कारण हमारे बड़े बड़े महात्म और महात्माओं का यही मत है इसी वास्ते उन्होंने कहा है कि " आनंद परम सुन्दर " उस आनंदका लाभ सहज और सुलभ कौनसी वस्तुमें है. इसका विचार बड़े बड़े बुद्धमान् लोगोंने जहां तक किया है, वहां तक यही माना गया है कि नाद विद्या अर्थात् (संगीत विद्या) के बराबर किसीभी वस्तुमें आनंद नहीं है यह प्रसिद्ध है 'सद्य' परनिवृतये, अर्थात् तत्काल आनंदका फल देनेवाली यह संगीत विद्या है.

अब हम संगीत शब्दका अर्थ कहते हैं. सम्+गीत मिलके संगीत शब्द हुआ है. सम याने उत्तम रीतिसे और गीत अर्थ गाना उत्तम रीतिसे जो गाना है अर्थात् शास्त्र रीतिसे सप्त स्वर मूर्छना, ताल और गमक समेत जो गान है उस सब समूह का नाम संगीत है.

"गीतवादित्रनृत्यानां त्रय संगीतमुच्यते"

इन तीनोंमेसे मुख्य गायन है. संगीत रत्नाकरमेभी ऐसाही कहा है. **"नृत्य वाद्यानुगंप्रोक्तं वाद्यं-गीतानुवर्तिच"** कारण **गान** स्वयं प्रकाशित है वादन और नृत्य यह दूसरेकी सहायतासे होते है इसवास्ते **गाना** मुख्य माना है.

अब गानेके उपयुक्त जो सात स्वर है उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं.

षड्ज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद.

इन स्वरोंके उच्चारण करते समय अर्थात् गातेसमय इनके यह उच्चारण क्रमसे होते हैं.

सा, रि, ग, म, प, ध, नि.

इन सातों स्वरों में आपस में कितना अंतर (फरक) है वह नीचेके नकशेसे मालुम होगा.

सा	रि	ग	म	प	ध	नि	सा
१	$\frac{९}{८}$	$\frac{५}{४}$	$\frac{४}{३}$	$\frac{३}{२}$	$\frac{५}{३}$	$\frac{१५}{८}$	२

इस सात स्वरोंके समूहका नाम सप्तक है. और ऐसे सप्तक प्रायः प्रचार में अर्थात् गाने में या वाद्यादि बजाने में तीनही आते हैं इससे अधिक यदि देखा जाय तो कोई वाद्य याने पियानों वगैरे सात सप्तक का काम देते हैं. परंतु गला हजारों में या लाखों में इतनी उंची आवाज कदाचितही देता हो. तीनों सप्तकोंके नाम नीचे लिखे जाते हैं.

मन्द्र, मध्य, और तार.

(१) इनके स्थान यह हैं " हृदि मंद्रो गले मध्यो मूर्ध्नि तारः इति क्रमात् " हृदय में जिन स्वरोंका ज्यादा जोर लगता है उनको मद्र सप्तकके स्वर कहते हैं. (जिसको आम लोग खरजका सप्तकके स्वर कहते हैं.

(२) मध्य वह है कि जिन स्वरोंका ज्यादा जोर कंठमें लगता है.

(३) तार वह है कि जिन स्वरोंका ज्यादा जोर तालुस्थानमें लगता है.

अब हम इन तीनों सप्तकोंको क्रमसे एक जगह लिखनेके वास्ते सब मे जो सुलभ और आसान रीति है उसको लिखते हैं. ताके गाना सिखनेमें किसी तरहकी तक्लीफ न होवे और गान अछी रीतिसे लिखा जावे. अब वह लिखनेकी रीति यह है.

इन चार लकीरोंके बीच जो तीन खाली जगह हैं उन खाली जगहोंके नाम क्रमसे नीचेसे ऊपर तक मंद्र, मध्य, और तार, ऐसे लिखे जावेंगे, उनके लिखनेकी पद्धति ऐसी है

तार	
मध्य	
मन्द्र	

अब जिस खाली जगहमें जिस सप्तकका नाम लिखा होगा उसी सप्तकके स्वर उसके आगे खाली जगहमें इस रीति लिखे जावेंगे

तार	सा रे ग म प
मध्य	प ध नि सा
मन्द्र	सा रि ग म

जब किसी स्वरसे ऊपरके स्वरको या स्वरोंको उच्चारण किया जावे तो उसको शास्त्र रीतिसे आरोह कहते हैं. और इसीतरह जब किसी स्वरसे नीचेवाले स्वर या स्वरोंका उच्चारण किया जावे तो उसको शास्त्रकार अवरोह कहते हैं. वह इस रीतिसे.

तार	आरोह	सा	अवरोह
मध्य	सा रि ग म प ध नि		नि ध प म ग रि सा
मन्द			

स्वरोंके भेद.

गानेके स्वर ६ प्रकारके होते हैं और उनका क्रम यह है शुद्ध, कोमल, अतिकोमल, तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम, परन्तु आज कल प्रचारमें प्रायः दोही भेद लोग समझते हैं वो यह है उतरा और चढ़ा (तीव्र और कोमल) इससे ज्यादे स्वरोंका भेद न समझनेके कारण बाकीके जो चार भेद हैं वह जिन जिन रागोंमें आते हैं उन रागोंका पूर्ण स्वरूप नहीं दीख सकता कारण कि, जबतक मनुष्य उन भेदोंको ठीक नहीं जान सकता तबतक उन रागोंका स्वरूप किस रीतिसे ठीक होवे ? जैसे हारमोनियम बाजेमें सब राग नहीं बज सकते, ऐसा जो लोगोंकी मोठी समझ है इसका मूल कारण अगर देखा जाय तो यही प्रतीत होगा कि उन चारों भेदों मे रहित हारमोनियम

बाजा होनेके कारण उसमें राग पूरे बजते नहीं अगर इसमें और चार भेद नये बनाये जावें तो हमारे सब हिंदुस्थानी राग उसमें ठीक ठीक बजेंगे इसमें कोई शंका नाहीं. स्वरोंके छे भेद लिखनेके वास्ते ऊनकी निशानिया अलग अलग नीचे दी जाती है.

नाम.	निशाणी.
शुद्ध....	ф
कोमल	ѱ
अतिकोमल....	Ұ
तीव्र....	◬
तीव्रतर	◬
तीव्रतम	◬

ऊपरके चिन्होंमेसे कोई चिन्ह जिस स्वरके पहिले दिया होगा उसी स्वरको उन भेदोंके माफक ऊच्चारण करना होगा. चिन्होंको अंकन रीतिमें इसतरह लिखा होगा.

तार	सा
मध्य	सा Ұरि ग म प Ұधे नि
मन्द्र	

जरूरी सूचना.

सात स्वरोंमेंसे (सा) (प) ये स्वर हमेशा शुद्ध रहते हैं बाकीके जो पाच स्वर है उन्हींको विकार होता है

अब हम ' टाइम ' याने ' लय ' अथवा समयके वास्ते विचार करते हैं कारण यह कि जबतक हम कोई लय मुकरर नहीं करते तबतक किसी स्वरको या स्वरोंको कितनी देरतक ठहराना और कितने देरतक नहीं मालूम कर सकते और किसी स्वर या स्वरोंको बिलकुल नहीं लिख सकते.

आजतक हमारा हिंदुस्थानी ' गाना ' नहीं लिखा जाता ऐसा जो बहुत लोगोंका समज है उसका मूल कारण जहांतक सोचा गया वहांतक यही माना गया है कि जबतक कोई लय मुकरर करते है, वह इस रीतिसे कि हमारे शास्त्रकारोंने मतसे ' चतस्र लयकारी मुख्य है अब उस चतस्रके कितने विभाग होते है इनकी अलग अलग निशानियां नीचे दी जाती है सो देखना और इन पर से टाईमको ठीक याद रखना, क्योंकि जबतक नीचे लिखे हुये टाईमको ठीक२ याद नहीं कीया जावेगा तबतक लवकरीतिका सब जोर और आधार लयकारी परही हैं इस वास्ते नीचे दी हुई लयकारीको पक्का (याद) के साथ गौरसे याद करना चाहिये कि जिससे लयकारीकि अच्छा रीतिसे समझ मे आ जावे और इलाम नई अक्षररीति बनानेका कायदा मालूम होनेसे इसपर गानेवालेके गानेका नोटेशन तुरतही बनाने में आ जावेगा इस वास्ते बडे प्रेमसे बडी खुशीसे और बडे ध्यानके साथ नीचेकी लयकारीको याद करना चाहिये

अब हर एक लयकारीका नाम निशानी गिनती और मात्रा इस नकशेसे मालूम होगी

नाम.	निशाणी.	स्वर गिनती.	मात्रामें.
चतस्त्र	×	१	४
गुरु	ऽ	१	२
लघु	—	१	१
द्रुत	०	२	१
अणुद्रुत	◡	४	१
अणु अणु द्रुत	◡◡	८	१
अणु अणु अणु द्रुत	◡◡◡	१६	१

उपरके नक्शेमें जो अलग २ लयकारीकी अलग २ निशानीया दी गई हैं उनका बयान नीचे लिखते हैं.

(×) 'यह चतस्रकी निशाणी' है चतस्र उसको कहते हैं जिसमें चार 'मात्रा' के बराबर समय लगे (हरएक मात्राकी लय साधारण रीतिसे एक सेकेंडके बराबर होती है) इसवास्ते हरएक 'मात्रापर' ताली देना और जब ऐसी चार 'मात्रा' हो जावेंगी तब मुखसे एक, कहिना एक शब्दको चार मात्रामें इस रीतिसे बाटना पहिले मात्रासे 'ए' शुरु होकर चौथी मात्रापर 'क' खतम हो जावे याने सब मिलके चार मात्रामें ठीक हिसाबसे 'एक' का उच्चारण होजाना चाहिये. उदाहरण —

तार	
मध्य	स ग प स × × × ×
मन्द्र	

(~) 'यह गुरुकी निशाणी' है. इसकी दो मात्रा है इसवास्ते इसको दो मात्रातक ठहराना और हरएक मात्रापर ताली देके पहिली मात्रासे (ए) शुरु करके दुसरीपर (क) खतम करना.

अब लिखनेमें यह निशाणी इसतरह स्वरके नीचे दी जावेगी —

तार	
मध्य	ग॒ ध॒ प॒ ग॒ रि॒ स-
मन्द्र	

(—) ' यह निशाणा लघूकी है ' इसकी एक मात्रा होती है इस वास्ते इसको एक मात्रा ठहराना और मात्रा पर ताली देके मुखसे (एक) कहना, लघुकी निशानिया नाचे मुजब जानना

तार	
मध्य	स रि ग प
मन्द्र	

(•) ' यह द्रुतकी निशाणी है ' इसकी आधी मात्रा है इसवास्ते इसको आधी मात्रातक ठहराना परन्तु मात्रापर ताली देके मुखसे पहिले आधी मात्रापर (एक) कहना और दूसरी आधी मात्रापर [दो] कहना मिलके एक मात्रामें मुखसे (एक) धमसे कहना

तार	
मध्य	स रि ग म
मन्द्र	

(ᴗ) ' यह अणुद्रुतकी निशाणी है ' इसकी पाव मात्रा है इसवास्ते इसको (एक मात्राके चौथे हिस्सेतक) ठहराना चाहिये परंतु हरएक मात्रा-पर हाथसे एक ताली देके मुखसे पहिले पाव मात्रापर (एक) आधे

मात्रापर [दो] पौनि मात्रापर (तीन) और पूरे मात्रापर (चार) ऐसे कहना चाहिये याने एक मात्रामें समहिसावसे (चार) भाग करना.

तार	सु
मध्य	सु रि ग म प ध नि
मन्द्र	

(७) 'ये अणुद्रुतकी निशाणी' है, इसकी आधपाव मात्रा है, इसवास्ते इसको एक अष्टमांश मात्रा (एक मात्राके आठ हिस्सेतक) ठहरना चाहिये परंतु मात्रापर ताली देके सुरोंमे पहिली आधपाव मात्रापर (एक) पाव मात्रापर (दो) देढपाव मात्रापर (३) आधे मात्रापर (४) ढाइपाव मात्रापर (५) पौनि मात्रापर (६) साडेतीन पाव मात्रापर (७) और पूरे मात्रापर (८) कहना चाहिये याने मिलके एक मात्रामें ठीक सम हिसावसे (८) भाग करना

तार	सु
मध्य	सु रि ग म प ध नि
मन्द्र	

(८) 'यह अणुअणुअणुद्रुतकी निशाणी' है. ये कभी गानेमें आती है इनको एक मात्रामें बराबर हिसावसे १६ गिनना.

तार	सु
मध्य	सु रि ग म प ध नि
मन्द्र	

चलत्नकी लयकारीका किस किस तरह उपयोग किया जाता है उसके कुच्छ उदाहरण आगे देते है ये जरूरी याद करना चाहिये.

तार	
मध्य	सु रि ग ग रि सु सु ग रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	सु रि ग रि ग रि सु रि ग सु रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग रि म ग रि म म स रि ग म
मन्द्र	

तार	
मध्य	प ध स रि ग रि स स ग रि स
मध्य	

स्वरके अथवा किसी लयकारीकी निशाणके आगे ( ) ऐसा चिन्ह दिया हो तो उस लयकारीको डेढ गुणा समजना चाहिये

उदाहरण.

तार	
मध्य	स . रि ग . रि ग प . ग रि स .
मन्द्र	

उपरकी निशानियोंका उपयोग इस रीतिसे किया जाता है.

इस स्वरकारीकी निशानीयोंमेंसे कोई निशानी अगर स्वरके आगे दी जावे तो उस स्वरके नीचे जो स्वरकारीका निशान होगी उसकी मात्रा और आगेकी निशानकी मात्रा इन दोनोंको मिलकर जितनी मात्रा होती होगी उतनी देरतक उस स्वरका उच्चारण करना चाहिये

तार	
मध्य	स ✕ रि I ग I म प ध I नि I ९
मन्द्र	

तार	
मध्य	सु I नि I धु धु I पु मु गु . Y
मध्य	

उपरके चिन्होंका उपयोग इस रीतिसे किया जाता है.

इस लयकारीमें से कोइ चिन्ह जिस जगह दिया जावे उस जगह उस लयकारीका जितना समय होगा उतने ही देरतक चुप रेहेना चाहिये.

उदाहरण.

तार	
मध्य	सु रि॒ १ सु सु ग रि ४ सु रि ४
मन्द्र	

तार	
मध्य	गु ा मु १ पु सु २ ४ रि ४ गु ४
मन्द्र	

तार										
तार								सं	रिं	ग
मध्य	सं	रि	ग	म	प	ध	नि			
मन्द्र										

तार	ग	रि	स	स					
मध्य					नि	ध	प	म	ग
मन्द्र									

तार										
मध्य	रि	स	स	रि	ग	म	प	ध	नि	
मन्द्र										

तालकी जातियां.

तालची जो चतस्र, तिस्र, मिस्र, खंड और संकीर्ण यह ५ जातिया है उनमेंसे सबसे सुगम चतस्रजाति है इसवास्ते उनको पहिले लिख दिया है अब तिस्रजाति लिखते हैं

तिस्रजातिकी लयकारीकी निशानी.

नाम.	निशाणी.	मात्रा.	गिनती.	एक गिनती की मात्रा.
तिस्रजाति गुरु	⊠	४	३	$\frac{४}{३}$
,, लघु	□	२	३	$\frac{२}{३}$
,, द्रुत	◡	१	३	$\frac{१}{३}$
,, अणुद्रुत	≈	१ १	६	$\frac{१}{६}$
,, अणुअणुद्रुत	≡	१	१२	$\frac{१}{१२}$

उदाहरण.

तार	
मध्य	स रि ग रि ग म स रि ग ग रि स
मन्द्र	

तार	स
मध्य	स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि स
मन्द्र	

तार	स
मध्य	स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि स
मन्द्र	

चतसजाति उच्चारणकी निशानीया.

नाम.	निशाणी.	मात्रा.	गिनती.	एक गिनतीकी मात्रा.
त्रिजाति उच्चारणें गुरु.	꠸	४	३	४/३
” ” लघु.	꠸	२	३	२/३
” ” द्रुत.	꠸	१	३	१/३
” ” अणुद्रुत.	꠸	१	६	१/६
” ” अणुअणुद्रुत.	꠸	१	१२	१/१२

तिस्रजाति उच्चारण और विश्रांतीके उदाहरण:-

तार	
मध्य	स रि प्र रि स रि ग प्र रि स रि प्र
मन्द्र	

तार	
मध्य	स रि प्र स ग रि स प्र ग प ध प
मन्द्र	

तार	
मध्य	-प ग-रि स -रि ग प ध प-ग प स
मन्द्र	

हरएक तालमें "ताली" "खाली" और सम होती है, इसका कारण यह है कि गति समग्र इन तीनों जगाओंके स्वरोंपर या बोलोंपर प्राय क्रमसे थोडा जोर दिया जाता है. तालीपर थोडा, उससे थोडा जादा खालीपर और उससे जादा समपर दिया जाता है. हरएक तालमें तीन किसमका लय होता है.

श्लोक-त्रयोलयास्तु विज्ञेयाः द्रुतमध्यविलंबिताः ॥

अब्न रीतिमें लिखनेके वास्ते सम, ताली, खालीके चिन्ह नीचे लिखते है

नाम	सम	ताली	खाली
चिन्ह	१	२	३

हरएक तालका अवर्त खतम होनेपर एक खडी लकीर दी जावेगी.

उदाहरण. चारताल.

तार	स
मध्य	स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि स
मन्द	

१ ३ २ ३ २ २

अब राग किसको कहते है इसका थोडा ध्यान करते है हमारे शास्त्रकारोंका मत है कि "॥ रंजयतीतिराग ॥" अथवा "॥ रंजक स्वरसंदर्भ सराग कथितो बुधै ॥" यानें आनंद करनेवाला जो नाद है अथवा जिन स्वरोंके आपसके मेल्से जो कानोंको अलानंद होता है उसको राग कहिना चाहिये. ऐसे राग गानेमें अनेक आते है. परंतु ये सब राग छै भेदके अंदर आते हैं.

हरएक तालमें "ताली" "खाली" और सम होती है, इसका कारण यह है कि गाते समय इन तीनो जगाओंके स्वरोंपर या बोलोंपर प्रायः क्रमसे थोडा जोर दिया जाता है. तालीपर थोडा, उससे थोडा जादा, खालीपर और उससे जादा समपर दिया जाता है. हरएक तालमें तीन लिसमकी लय होती है.

श्लोक-त्रयोलयास्तु विज्ञेयाः द्रुतमध्यविलंबिताः ॥

अंग्रेज रीतिमें लिखनेके वास्ते सम, ताली, खालीके चिन्ह नीचे लिखते है.

नाम	सम	ताली	खाली
चिन्ह	१	२	३

हरएक तालका अवर्त खतम होनेपर एक खडी लकीर दी जायेगी.

उदाहरण. चारताल.

तार	स
मध्य	स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि
मन्द्र	

१ २ ३ २ ३ २ २

अब राग किसको कहते है इसका थोडा ब्यान करते है. हमारे बारोंका मत है कि "॥ रंजयतीतिराग ॥" अथवा "॥ रंजक स्वराग. कथितो बुधै ॥" यानें आनंद करनेवाला जो नाद है अ स्वरोंके आपसके मेलसे जो कानोंको अत्यानंद होता है उसको र चाहिये. ऐसे राग गानेमें अनेक आते है. परतु वे सब राग अंदर आते हैं.

रागके छे किसम.

ओडव, षाडव, शुद्ध, संपूर्ण, छायालगत्व संकीर्ण.

जिस रागमें पाचहि स्वर आते हो, चाहे वह स्वर शुद्ध अथवा विकृत हो परंतु उस रागका नाम ओडव है.

जिसमे छे स्वर हो उसको षाडव कहिना चाहिये.

और जिसमें सात स्वर आते तो उसको संपूर्ण कहिना चाहिये.

जिस रागमें केवल शुद्धही स्वर आते हों उसको शुद्ध कहिना चाहिये.

जिस रागमें दूसरे रागके कुछ स्वर उसको और मनोहर बनानेके वास्ते लगाये जावे तो उसको छायागत्व कहिना चाहिये.

संकीर्ण उसका नाम है कि जहा तीन चार किसमके राग रंग मिले हो और कानोंको अछे मालूम देते हो.

हमारे हिंदुस्थानी गानेमें हरएक रागमें जरुर कविता आती है. और कवितामें प्राय. दो भाग हैं उनके नाम क्रमसे अस्थाई और अंतरा है. परन्तु किसी २ कवितामें अभोग करके एक तिसरा भेद होता है.

यह भेद गानमें इस क्रमसे आते है. पहिले अस्थाई फिर अंतरेके बाद अभोग जिस जगह अस्ताई खतम होगी वहा दो खडी लकीर होगी उनके मतलब ये होगा कि फिर एक बार अस्थाई कहिनी चाहिये. अंतरा जहा खतम होगा वहा तीन खडी लकीरें होगी उन लकीरोंकाभी यही मतलब होगा कि फेर पहिलेसे अस्ताई कही जाय अंतरेके माफिक अभोगकोभी उन्नांही लकीरें होगी अंतमें हमेशा गायन समाप्त करते समय अस्थाई कहके करना चाहिये.

✱ यह चिन्ह जिस समय खडी लकीरपर दिया होगा उस समय फिर शुरुसे अस्ताई कहिनी. ✱ यह चिन्ह जब लकीरपर होगा तब जितने अस्थाईके बोल लकीरके पहिले होंगे उनके आगे सब अस्थाई कहके फिर वहातक उन बोलोंको लाके छोडना. ✱ यह निशानी जब होवे तब वहींसे अंतरा कहिना ✱ यह निशानी जब होगी तब लकीरके पहिलेतक जितने अंतरेके बोल आये होंगे उनके आगे अंतरेके बोल शुरु करके फिर वहांतक उसको लाके छोडना चाहिये.

हमारी अङ्कन रीतिपर लिखे हुए राग.

इस तरह पढने चाहिये की पहिले अङ्कित रागके उपर लिखी हुई सूचनाको देखकर फिर स्वरोंको लयकारीमें पढना उसके पश्चात नीचे लिखी कावताको उन स्वरोंके मुताबिक गाना चाहिये जब स्वरमें याद हो जाय, तब तालके साथ (जो कि कवितके नीचे लिखा होगा) गान अच्छा होगा

मूर्छनाका वर्णन.

क्रमात्स्वराणां सप्तनामारोहश्चावरोहणम् ।

अथवा.

मूर्छना याने मूर्छा याने पूरी बेहोशी नही अथवा पूरी हुशयारी नहा ऐसा जो स्थिति उसको मूर्छना, कहते हैं

अब स्वरोंमें बेहोशी और हुशारीका तात्पर्य यह है की कोई स्वर कभी २ अपने पूरे स्थानपर न रहे, और कभी कभी स्थानपर आवे फिर कम या ज्यादा होवे परतु दूसरा स्वर उनमें न आवे और कानोंको अछा मालुम देवे ऐसा जो स्वरका हिलना है उसको मुर्छना कहते है

बाजे बाजे गानेवाले लोगोंकी आवाज ही बेसुरी होती है याने स्वरसे कम या ज्यादे होती है इसीको मूर्छना समझ लेना बडी भूल है वह मूर्छना नहीं कही जायगी, कारण मूर्छना यह है कि जो कुल रागोंमें दी जाती है और उसका मूल हेतु रागोंमें, देनेका यह है कि वह राग कानको ज्यादा मधूर मालुम होवे

मूर्छनाकी निशानी इसतरह होगी (ᵕ) और ऐसी निशानी जिस स्वरपर दी जावेगी उस स्वरपर मूर्छना है ऐसा जानना और उसी माफिक स्वरका उच्चारण करना

उदाहरण.

तार	
मध्य	सा रि ग प धँ प ग रि
मन्द्र	

(ध) पर और (रे) पर जो निशाना दा है उसा माफिक गूंजनाकी निशानी स्वरपर दी जावेगी.

अब १ आर्चिक, २ गाथिक, ३ सामिक, ४ स्वरांतर, ५ ओडव, ६ षाडव और ७ संपूर्ण जिसको कहते है उसका थोडासा वर्णन करते है.

(१) आर्चिक—उसको कहते है कि सातों स्वरोंमेसे कोई एक स्वर होवे उदाहरण —सा.

(२) गाथिक—उसका नाम है कि सातों स्वरोंमेसे कोई दो स्वर होवे. उदाहरण —सा, रि.

(३) सामिक—उसको कहते है कि सातों स्वरोंमेसे कोई तीन स्वर होवे. उदाहरण —सा, रि, ग.

(४) स्वरांतर—उसका नाम है कि सातों स्वरोंमेसे कोई चार स्वर होवे. उदाहरण —सा, रि, ग, म.

(५) ओडव—उसका नाम है कि सातों स्वरोंमेसे कोई पांच होवे. उदाहरण —सा, रि, ग, म, प.

(६) षाडव—उसका नाम है कि सातों स्वरोंमेसे कोई छे स्वर होवे उदाहरण —सा, रि, ग, म, प, ध.

(७) **संपूर्ण**—याने जिसमें सातों स्वर आवे **सा, रि, ग, म, प, ध, नि.**

इन सातों स्वरोंमें कौन कौनसे स्वर आपसमें मेल रखते है उसका वर्णन करते हैं

सा—से तो सब स्वर सबध रखते हैं—परतु उनमेंसे ज्यादा सबध आपसमें **सा** और **प** का है ऊसी माफिक **म** भी सा, के साथ सबध रखता है परतु **पंचम** जितना **सा,** से सबध रखता है, उससे कम **म** सबध रखता है

अब **रे** से **ध** सबध रखता है इससे थोडा कम **पंचम रे** से सबध रखता है

ग से **निषाद** सबध रखता है इससे कम गधारसे धैवत सबध रखता है

म से **षड्ज** और **निषाद** सबध रखते हैं ऐसे सब स्वर आपसमें सबध रखते है

तात्पर्य—यह है कि हमेशा स्वरसे पांचवा और चौथा स्वर आपसमें सबध रखते हैं एक तो इसतरहका सबध भान रखके गानेमें या वाद्या दिक मिलानेमें किया जाता है और दूसरा यह प्रकार है उसके शास्त्रकारोंने **वादी, संवादी अनुवादी,** और **विवादी** ऐसे चार भेद किये हैं, इनमेंसे **वादी, संवादी, अनुवादी** यह स्वर तो आपसमें सबंध रखते हैं परतु **विवादी** विरुद्ध रहता हैं शास्त्रकार **वादी** मुख्य स्वरको समझते हैं, **संवादी** बराबरका समझते हैं **अनुवादी** दोनोंको मदत करनेवाला हैं और **विवादी** तिनोंसे विरुद्ध रखता हैं—

उदाहरण.—(सा) का वादी (प) हैं और इन दोनोंका (ग) अनुवादी हैं इस वास्ते **सा, ग, प, सा** ऐसा वहा कहा जावेगा अगर इन स्वरोंमें (रे, म ध) अथवा नी इनमेंसे कोई स्वर लगाया जावेगा, तो इन स्वरोंके **विवादीमें** गिना जावेगा परतु कभी २ तार सप्तकके (सा) को इन स्वरोंके साथ नहीं लगाया जावेगा तो (नी) स्वर **अनुवादीमें** गिना जावेगा

नंबर १.

तार	
मध्य	स ¥ रि स ϕ रि स ¥ ग स ϕ ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	स ϕ म स ▲ म स प स ¥ ध स ϕ ध
मन्द्र	

तार	स स स
मध्य	स ¥ नि स ϕ नि स ϕ नि ¥ नि
मन्द्र	

तार	स स स स स स
मध्य	ϕ ध Ψ ध प △ म ϕ म
मन्द्र	

तार	स स स स
मध्य	ϕ ग Ψ ग ϕ रि Ψ रि | स
मन्द्र	

नंबर २.

तार	
मध्य	स रि ग म स प रि ध ग नि म
मन्द्र	प ध नि

तार	स
मध्य	प स . ग
मन्द	

नंबर १.

तार	स स
मध्य	म स प ग रि ध नि
मन्द	

तार	
मध्य	स रि नि ध ग प ध प म ग रि स
मन्द	

तार	
मध्य	सु रि ग रि ग प ४-४ पु . धु पु
मन्द्र	नि पु नि

तार	
मध्य	मु गु रि सु सु रि नि धु १ पु .
मन्द्र	नि पु नि

तार	सं रिं
मध्य	धु पु मु गु रि सु सु रि
मन्द्र	नि पु नि

तार	ग रि स • १	स रि स • ४
मध्य	ध नि	ध नि
मन्द्र		

नंबर ५.

तार		
मध्य	प • ध प म ग रि स	स रि
मन्द्र	नि प नि	

तार		स रि
मध्य	ध प म ग रि स	स रि
मन्द्र	नि प नि	

तार	
मध्य	मु गु रि सु सु रि गु रि गु पु
मन्द्र	नि पु नि

तार	
मध्य	सु रि सु २ १ पु धु पु गु पु गु रि गु रि
मन्द्र	

तार	सु
मध्य	सु रि-सु सु रि गु पु सु. सु
मन्द्र	

नंबर ५.

इसमें सब स्वर अतिकोमल दूसरे स्वर जिस जग आवेंगे उस जँग उसकी निशानी होगी.

तार	
मध्य	रि रि रि रि रि रि ग रि ग रि ग रि स
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि स रि स ऽ रि रि रि रि रि रि ग रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग रि ग रि स रि स रि स ऽ म ० ०
मन्द्र	

तार	
मध्य	ध प म ग रि स रि ऽ ऽ ग रि रि ग रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	म ध ध ध ध प ध प म प म ग म ग,
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि ग रि रि ग रि स स स ऽ रि रि रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि रि रि ग रि ग रि ग रि स रि स रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	स ऽ रि रि रि रि रि रि ग रि ग रि ग
मन्द्र	

तार	स रि स
मध्य	रि स रि स रि स ऽ नि ध नि
मन्द्र	

तार	स रि स ग
मध्य	प ध प म ग म प ध प ग
मन्द्र	

तार	रि स
मध्य	नि ध प म ग रि स स ग म म
मन्द्र	नि

तार	स रि स
मध्य	रि ग म ग म ग रि स नि ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	प म ग रि रि सरि रिरिरिरिरि ग रि
मन्द्र	नि

तार	
मध्य	ग रि ग रि-स रि स रि स ऽ रि रि रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि रि रि ग रि ग रि ग रि स रि स रि
मन्द्र	

तार									स	स	स		
मध्य	स	ऽ	ध	ध	ध	रि	रि	रि				प	प
मन्द्र													

तार		स			रि		ग			स
मध्य	प		स	स			प	म		
मन्द्र						ध			नि	प

तार	म		स	‖
मध्य		ध		‖
मन्द्र				‖

११ हुंपित—उसका नाम है, जिन स्वरोंकी हुंकार हृदयओमें होवे.
१२ मुद्रित—उसका नाम है कि मुंहें मुंदके जो स्वरोंकी आवाज निकले.
१३ नामित—उसका नाम है कि हरएक स्वरको नीचे दाब देना याने प्रत्येक स्वर नीचे झुकाना.
१४ मिश्रित—उसका नाम है कि पीछे जो तेरह तरहकी गमक लिखी है उनमेंसे कोई किसमकी दो या अधिक गमकोंका मेल याने समावेश होवे
१५ झुरूल—उसका नाम है कि कुछ थोडे या बहुत स्वरोंको एकदम ऊपर ले जाना और जो अखीरका स्वर आवे उसपर जोरसे धक्का देना अथवा ऊपरसे नीचे स्वरोंको लाते समय जो अखीरका स्वर आवे उसको जोरसे धक्का देना.

गमकों के चिन्ह.

गदगदितगमक, (—) इस किसमकी लकीर जिन स्वरोंपर आवेगी उन स्वरोंसे गदगदितगमक कि आवाज निकालनी चाहिये।

मुद्रित, (==) ऐसी दो लकीरें जिन स्वरों पर आवेगी उन स्वरोंको बारीक आवाज करके और मुख को थोडा खोलके गाना चाहिये।

मुर्छना, (ᵕ) इस प्रकार की निशानी जिन स्वरोंपर आवेगी उन स्वरोंको धक्का देके आवाज निकालना चाहिये।

प्लावित, (१–२) एक से दो गिनती तक बीच के स्वरोंपर प्लावित गमक (मींड) लेना चाहिये याने स्वरको विना तोडेमिन्ड निकालना चाहिये।

(०) जिन स्वरोंपर (सां) ऐसा चिन्ह होगा उन स्वरोंको बडी बडी आवाज के साथ कंठ खोल के गाना (धं) इसी प्रकार से (·) ऐसी निशानी जिन स्वरों पर आवेगी उन स्वरोंको बारीक आवाज से याने कंठ दबा के गाना चाहिये।

(> <) जिन स्वरोंपर इन चिन्हों में से कोई भी आवे तो जैसे चिन्ह का आकार है उस के माफक छोटा बडा आवाज करना चाहिये।

आहात, (ᐩ) ऐसा चिन्ह जिन स्वरोंपर होगा उन स्वरोंसे धक्के के साथ याने झटके के साथ गमक निकालके याने आवाज को आघात करना चाहिये।

अन्दोलित (⌢) जिन स्वरों पर ऐसा चिन्ह आवेगा उन स्वरों को आन्दोलित स्वरों के माफक आवाज निकालना।

संगीत शिक्षणकी क्रमिक पुस्तकें.

इस विद्यालय में पं० विष्णु दिगंबरजीनें संगीत आज तक जो किताब तयार किइ उनके नाम और किंमत.

	भाग	रु.	आ.
महिला संगीत हिंदी.	१-२	०	६
संगीत तत्त्वदर्शक.	१	०	८
अंकित अलंकार.	१	०	८
हारमोनियमप्रकाश हिंदी और उरदू.	१-३	२	४
" केवल हिंदीमें	१-५	१	४
संगीत बालबोध हिंदी और उर्दू.	१	१	८
" " द्वितीय भाग.	२	१	०
स्वल्पालाप गायन.	१-३	३	१२
राग प्रवेश.	१-१३	११	०
व्यायामके साथ संगीत.	१-२	१	०
संगीत प्रथम भाग हिंदी.		२	०
" द्वितीय.		३	०
राग भैरव.		२	०
राग मालकंस.		२	०
राग भूपाली.		२	०
मृदंग और तबलेकी पुस्तक.		१	९
सतारकी पुस्तक.	१-२	३	०
भारतीय शिक्षा भाषा टीका समेत.		१	०
भजनामृत लहरी.	१-५	२	८
राम नामावली.		०	२

इसके सिवाय श्रीयुत मुकधनकर कृत पद्यावलिया मिलेंगी.

मॅनेजर,
गांधर्व महा विद्यालय.

प्रस्तावनिका.

यह महिला संगित पुस्तक बनाने का मुख्य उद्देश यह है कि कन्याओं मे संगीत विद्या का प्रचार सुलभतासे हो. तथा घर घर में ईश्वर गुणानुवाद गायन के साथ गाने लग जाय, और यह गायन विद्या आसानी से कन्याओं को प्राप्त हो जावे. इस पुस्तक में केवल प्राथमिक जो गायन विद्या सिखने का क्रम होता है. यह सुलभता से लेखन पद्धती के अनुसार लिखागया. इस पुस्तक के सिखने से गायन विद्या की क्रम क्रम से उच्च श्रेणी सिखनेके लिये आसानी होगी. खास कन्याओं के शिक्षण के लिये यह पुस्तक बहोतही उपयोगी होगा. इस किसम का पुस्तक बनाने के कार्य मे मेरे मित्र लाला देवराजजी प्रेसिडेंट कन्या महा विद्यालय जालंधर ने कन्या तथा स्त्रियों के उपयुक्त गीत दिये इस लिये मै उनका बहोत बहोत धन्यवाद मानता हूं अब सब सज्जनों से निवेदन है की वह अपनी कन्याओं को इस महिला संगीत पुस्तक से गान विद्या का शिक्षण देंगे. जिससे उन के गृह की शोभा बढ जाय.

भवदीय,

पं. विष्णुदिगंबर.

महिला संगीत.

भाग १ ला.

पाठ १ ला.

प्रश्न—गायन सीखने से क्या लाभ होता है?

उत्तर—गायन सीखने से ४ प्रकार के लाभ होते है.

प्रश्न—वह कोनसे?

उत्तर—मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा धार्मिक.

प्रश्न—मानसिक फायदा कोनसा है?

उत्तर—गायन करने से मन प्रसन्न हो जाता है तथा मन में शुभ विचार आकर मन शुद्ध रहता है और हरएक काम करने के लिये मनका उत्साह बढ जाता है तथा मन में शान्ती आती है और मन को जो किसी किसम का दुःख प्राप्त हो तो वह गायन के द्वारा तुरतही नष्ट हो जाता है इस प्रकार के अनेक गुण गायन में है जो की मन को फायदा करने वाले है.

प्रश्न—शारीरिक फायदा कोनसा?

उत्तर—गायन करने से शरीर में वायू शुद्ध होता है कारण प्राणायाम करने से जैसा वायू शुद्ध रहता है वैसे गाने से छाती की बिमारी होती नहीं और कफादिक रोग हट जाते है और छाती तथा फुपूस मजबूत हो जाते है. मस्तक में शाती प्राप्त होने से रात को निद्रा ठीक आती है; तथा शरीर में हरएक काम करने के लिये स्फुर्ती रहती है.

प्रश्न—सामाजिक फायदे कोन से?

उत्तर—बडे बडे महात्मा सत साधू-ऋषियों के बनाये हुये सदुपदेश वाले भजन कविता श्लोक गाने से सुनने वाले पर उस के अर्थ का परिणाम हो के वह अच्छे आचरणोंको करने लगते है इसी प्रकार धार्मिक उपदेशके गीत गाने से धर्म पर भक्ती हो कर उसी मार्ग में चलने के वास्ते प्रयत्न होता है.

पाठ २ रा.

प्रश्न—गायन सीखने के लिये पहिले क्या सीखना चाहिये?
उत्तर—स्वर सीखना चाहिये.
प्रश्न—स्वर कितने है?

उ०--स्वर सात है.

प्र०--वह कोनसे?

उ०--षड्ज, ऋषभ, गधार, मध्यम, पचम, धैवत, निषाद.

प्र०--गाते समय इन स्वरों का उच्चार किस प्रकार से किया जाता है?

उ०--स, रि, ग, म, प, ध, नि.

प्र०--सात स्वर के समूह का क्या नाम है?

उ०--सप्तक.

प्र०--सप्तक कितने होते है?

उ०--तीन.

प्र०--तीन सप्तकों का नाम क्या?

उ०--मन्द्र, मध्य, तार.

प्र०--मन्द्र सप्तक किस को कहते है?

उ०--हृदय में जिन स्वरोंका उच्चारण करते समय अधिक जोर
लगता है तथा जिन स्वरों से हृदय अधिक गूज निकले
वह मन्द्र सप्तक.

प्र०--मध्य सप्तक कोनसा?

उ०--जिन स्वरों का उच्चारण करते समय कंठ में अधिक जोर लगे वह मध्य सप्तक है.

प्र०--तार सप्तक किस को कहते है?

उ०--जिन स्वरों का जोर तालु स्थान में लगता है वह तार सप्तक है.

प्र०--सात स्वर जो है उन के उच्चारण अलग अलग किस वास्ते किये गये है?

उ०--उन के सात आवाज अलग २ किमम के है.

प्र०--सात आवाज है वह किस प्रकारसे अलग अलग होते है?

उ०--सा की आवाज से रे की आवाज उची है, और रे की आवाज से ग की आवाज उंची है, इसी प्रकारसे ग से म, म से प, प से ध, ध से नि.इस प्रकार से एक से एक उचे तथा अलग अलग सात आवाज होने के कारण वह सात स्वर अगल समजे गये है.

प्र०--स्वर को ऊचा चढाना, तथा नीचे उतारना इस को क्या कहते है?

उ०—आवाज ऊचा ले जाने को आरोह कहते है और निचे उतारने को अवरोह कहते है-

प्र०—मन्द्र, मध्य और तार इन सप्तको मे क्या फरक है'

उ०—मन्द्र सप्तक से मध्य सप्तक ऊचा है, और मध्य से तार सप्तक ऊचा है, यही फरक इन सप्तकों में है.

पाठ ३ रा.

प्र० सप्तक को लेखनपद्धती में किस प्रकार से लिखना चाहिये

उ० -पहिले चार लकीरे आडी खेंच कर फिर बाई तरफ दो खडी लकीर खेचनी जिस से तीन खाने बन जावेंगे पहिले खाने में मन्द्र दुसरे खाने में मध्य और तिसरे खाने मे तार करके लिखना उसका उदाहरण आगे के माफक —

तार	
मध्य	
मन्द्र	

प्र०—तीन सप्तकों में से किसी सप्तक में यदि सा, रि, ग म

प, ध, नि यह स्वर लिखने होंगे तो किस प्रकार से लिखे जावे?

उ०—जिस सप्तक के स्वर होंगे वह उसी खाने में लिखने चाहिये.

प्र०—उदाहरण लिखलाओ?

उ०—

तार				स
मध्य		स रि ग		
मन्द्र	नि			

पाठ ४ था.

प्र०—स्वर नापने के वास्ते क्या साधन है?

उ०—ताल.

प्र०—ताल किसको कहते है?

उ०—वखत या समय गिनने के वास्ते जो हाथ से ताली दी जाती है, उसको ताल कहते है.

प्र०—ताल की गती को क्या कहते हैं?

उ०—लय कहते हैं.

प्र०—लय कितनी किसम की है?

उ०—तीन किसम की.

प्र० लय के जो तीन प्रकार हैं उन का नाम क्या?

उ०—विलंबित, मध्य, द्रुत.

प्र०—विलंबित, मध्य, द्रुत किसको कहना चाहिये?

उ० विलंबित याने बहुत धीमी लय याने धीरे चलने वाली लय, मध्य याने विलंबितसे दुगणी चलने वाली, और मध्य से दुगण में चलने वाली लय को द्रुत लय कहते हैं

प्र०—जिस माफक आवाज नापने के लिये मान स्वर है उस माफक लय को नापने के वास्ते क्या साधन है?

उ० लय नापने के वास्ते मात्रा है

प्र०—एक मात्रा की लयकारी कितनी होती है?

उ०—एक सेकंड के बराबर.

प्र०—मात्राके भेद कितने हैं?

उ०—सात.

प्र०—वह कोनसे?

उ०—चतस्र, गुरु, लघु, द्रुत, अणुद्रुत, अणुअणुद्रुत, और अणुअणुअणुद्रुत.

प्र०—इन भेदों की मात्रा बतलाओ?

उ०—चतस्र की चार मात्रा, गुरु की दो मात्रा, लघु की एक मात्रा, द्रुत की आधी मात्रा, अणुद्रुत की पाव मात्रा, अणुअणुद्रुत की आधपाव मात्रा, अणुअणुअणुद्रुत की पावमात्रा की पावमात्रा याने एक मात्रा को सोलवा हिस्सा.

पाठ ५ वा.

प्र०- मात्राओं के भेदों को लेखन में किस प्रकार लिखा जायेगा वह लिख के बतलाओ?

उ०—चतस्र, गुरु, लघु, द्रुत, अणुद्रुत, अणुअणुद्रुत, अणुअणुअणुद्रुत.

× ~ — ० ◡ ◡ ◡

प्र०- इन चिन्हों का उपयोग सप्त स्वरों में किस रीति से किया जाता है, इस का लेखन में उदाहरण बतलाओ?

उ०— स रि ग म प ध नि

पाठ ६ वा.

अध्यापकों के लिये सूचना—निम्न लिखित स्वर विद्यार्थी को आवाज से जब तक ठीक न निकले तब तक सिखलाना चाहिये और जब वह स्वर ठीक बैठ जायेंगे तब उनही स्वरोंको अ, आ, इ, उ, ई अकार, इकार आवाज से निकालने के वास्ते प्रयत्न करना चाहिये क्यों कि यह आवाज में तैयार होने से किसी गीत पर तान आलाप सीखलाने के वास्ते इस का बहुत उपयोग होगा, इस बातपर ध्यान दे के सिखलाना चाहिये

नंबर १.

तार	
मध्य	स म म स म स स
मन्द्र	

तार	
मध्य	स रि, रि म, म रि रि, ग रि म.
मन्द्र	

शि० सू०—उपर के दीये हुये स्वर जब विद्यार्थी को हो जायेंगे तब आगे लिखा हुवा प्रश्न पूछना

प्र०—'सा" का आवाज निकालो?

शि० सू०—विद्यार्थी "सा' स्वर का उच्चार करेगा उस वक्त इस बात का विचार करना चाहिये कि उसका स्वर ठीक लगा या न लगा यदि उस में कुछ उँटी (खामी) होय तो बतलानी चाहिये

प्र०—"रे" स्वर कहो?

शि० सू०—सा और रे स्वर बहुत वखत पूछकर फिर निम्न लिखित स्वर सिखलाने चाहिये

तार	
मध्य	स रि ग, स रि ग, स ग रि,
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि स ग, रि ग स, ग स रि,
मन्द्र	

शि०सू०- ऊपर के लिखे हुये स्वर विद्यार्थियों को अलग २ रीति से पूछना

पाठ ७ वां.

प्र०—चतस्र की मात्रा कितनी?

उ०—चार.

प्र०—चतस्र कर के दिखलाओ?

उ०—हाथ से चार वख्त ताली बजा कर पहिले ताली से 'ए' अक्षर शुरू कर के चौथी ताली पर 'र' कहिना फिर के चार ताली के अंदर एक को बोलना

प्र०—चतस्र की लयकारी को स्वर के साथ उपयोग कर के दिखलाओ?

उदा०–स रि ग इन में से कोई भी स्वर हाथ से ताल दे कर गा के सुनाओ.

प्र०–गुरु की मात्रा कितनी?

उ०–दो.

प्र०–गुरु की लयकारी में सारेग में से कोई एखादा स्वर गा कर सुनाओ?

प्र०–लघु की मात्रा कितनी?

उ०–एक.

प्र०–लघु की लयकारी में सारेग यह स्वर गा के सुनाओ?

शि०सू०–ऊपर कही हुई चतस्र, गुरु, लघु यह जब विद्यार्थियों को ठीक समझ में आ जावें तब आगे के स्वर सिखलाने चाहिये.

तार		
मध्य	स रि ग म रि स	रि ग गस रि रि ग स
मन्द्र		

पाठ ८ वा.

आगे के स्वर मिलाने.

तार	
मध्य	म रि ग म म ग रि म म म रि ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	म रि म ग म ग म रि म म ग रि
मन्द्र	

टि०नं० [illegible]

पाठ ९ वां.

तार	
मध्य	स रि ग म प स रि ग प म स रि म
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग स रि म ग प स रि प म ग स रि प
मन्द्र	

तार	
मध्य	म स रि ग म प ध स रि ग म ध प स
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग ध प म स रिं ग ध म प स रिं ग प ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	म म रिं ग प म ध स रिं ग म प ध नि ध
मन्द्र	

तार	स
मध्य	प म ग रिं स म रि ग म प ध नि नि ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	प म ग रि स
मन्द्र	

पाठ १० वां.

तार	स
मध्य	स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि
मन्द्र	

तार	स
मध्य	स स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि
मन्द्र	

तार	स
मध्य	स स रि ग म प ध नि नि ध प म ग
मन्द	

तार	
मध्य	रि स
मन्द	

शि०सू० ऊपर जो दिये हुए स्वर हैं उन सात स्वरों में से अलग अलग स्वर विद्यार्थियों को आवाज से लगाने को कहना और तत्पश्चात् आगे के गायन के पाठ सिखलाना.

नंबर १.

तार	
मध्य	प स प ग ग . ँ रि ग ग स रि . ँ
मन्द्र	नि
	प्या रा . प्या रा ई श्व र प्या रा आ

तार		
मध्य	स स रि स . ँ	म म म
मन्द्र	नि ध नि नि	
	म ज ल चा दे ने हा रा	गा य भैं

तार	
मध्य	म ग म-प प प प प . ४ प ध ध ध प
मन्द्र	

स औ र मैं हैं व करी उ स का है य

तार		
मध्य	ध ग ध प म ग रि स . ४	
मन्द्र		

ह चि न्ता . रा . . .

नंबर २.

तार		
मध्य	स ग ग स ग ग स ग ग प . ४	प ध
मन्द्र		

गो द में ई श्व र है मैं बि टा स ची
१ २ ३ २ १

तार	सु	सु सु
मध्य	पु पु धु पु गु • ४	पु पु धु
मन्द्र		

पु त्री ह में व ना प्रे म हि से ह
२ ३ २ १ २

तार		
मध्य	धु मु पु मु गु • ४	गु मु पु धु नि रि
मन्द्र		

म र हे स दा दौ डे कू दे मं ग
३ २ १ २ ३

तार		सु
मध्य	रि सु • ४	सु गु गु पु पु नि धु
मन्द्र		

ल गा १ २ ३ २
२

तार	
मध्य	प ध प म ऽ ऽ स स स स . Y
मन्द्र	
	१ २ ३ २

यह फकत (सारिगम) गाना.

इस के आगे (फल और फूल) यह बोल हैं यह (गोद-में ईश्वर) जैसा है वैसा गाना. और आगे जो सारिगम (मागगप) लिखी है वह गाना.

फल और फूल को तेरे भोग,
दूध दही खा रहें निरोग ।
पशु हमारे रहें सहमेल,
फलें हमारे पौधे बेल ॥
हल मिलकर सब कन्यायें,
गीत ईश के नित गाय ॥

नंबर ३.

तार	
मध्य	प म ग स रि ग रि स . ४ स
मन्द्र	. नि

ह रि स मा न दा . ता ज ग

१ ३ २ ३ २ २

तार	
मध्य	रि ग रि ग म प प ४ नि ध प म ग . ४
मन्द्र	

मे . दु स रा . न को . ई . .

१ ३ २ ३ २ २

तार		
मध्य	रि रि म म प प प प	रि म म प प ध
मन्द्र		

सा धु और अ सा धु पा ले बो ध अ बो ध दो

१ ३ २ ३ २ २ १ ३ २ ३ २

ज ग त मे है . जो . ई .
१ ३ २ ३ २ २

इस भजन के और जो अतरे है वह उपर के अतरे के माफक गाना

जीव पाले जन्तु पाले, कीट कृमि होई ।
जड चैतन्य सब को पाले, पाप सब के धोई ॥ २ ॥
दुराचार दुष्ट लम्पट, धर्म राज सोई ।
तिस की दात भोगें निशदिन, खायें पहिरें सोई ॥ ४ ॥
प्रीति जिस की दम के जग में बेल पुष्प गोई ।
धन्य ऊची तिस को दाया, शरण उस की होई ॥ ६ ॥

नंबर ४ लोअर प्रायमेरी ५ श्रेणी.

तार	
मध्य	सु ु ॰ सु गु सु रि गु मु पु • ऽ धु धु
मन्द्र	

गु ण गा वे गी ई • श्व र के फ ल

तार	
मध्य	पु धु मु पु गु मु रि गु सु रि सु • पु
मन्द्र	• नि

पा • वे • गी • ई • श्व र से • ई

तार	सु सु सु सु
मध्य	नि धु पु धु नि • ऽ नि धु
मन्द्र	

श्व र अ म्मा है स ब की म हि मा

तार		
मध्य	नि प ध म प ग म रि ग स • ऽ	स ग
मन्द्र		
	• उ न की • ब हु त ब डी	स्वा दु

तार	सं सं • ऽ सं
मध्य	प ध नि ध नि नि ध प म
मन्द्र	
	स्वा दु भो • ज न दे ई • श ब डा

तार	रिं सं • ऽ	
मध्य	ग रि ग प ध नि	स ग ग
मन्द्र		
	• ता • सु र स ब के	ई श हि

तार	
मध्य	स स ग ग ग रि ग म · ऽ ग प म प
मन्द्र	

र च ता ज ल औ र आग खे त म व

तार	स
मध्य	प प ग ध प ध · ऽ प ध नि नि नि
मन्द्र	

ही उ गा ता · साग प्या र क रू मै स

तार	स · ऽ ग ग रि स · ऽ
मध्य	नि ध नि
मन्द्र	

व से · ही य हि आ ज्ञा

तार			
मध्य	म प॒ . Y	ग प प प	म प म ग
मन्द्र			

. . स खी दा सी अ प नी .
२ ३ २ २ ३ २

तार		
मध्य	रि रि ग	ग म ध प॒ . ग म ग रि
मन्द्र		

. प्र भु की . जी . ये . ह री
२ ३ २ २

तार	
मध्य	स रि स .
मन्द्र	नि नि

की . जी ये .
३ २ २

इस भजन के और जो अंतरे हैं वह ऊपर के
अंतरे के माफक गाना.

खाना पीना हमको तुम, प्रभु देते हो, हरि देते हो ।
मोल हमसे कुछ नहीं, प्रभु लेते हो, हरि लेते हो ॥ २ ॥
फूल फले हम पाते हैं, प्रभु आप से, हरि आपसे।
दुख टल सब जाते हैं, प्रभु आप से, हरि आप से ॥ ३ ॥
माता सम हमें गोद में, प्रभु लीजिये, हरि लीजिये ।
प्यार हम को आपना, प्रभु दीजिये, हरि दीजिये ॥ ४ ॥

{ समास. }

संगीत शिक्षणकी क्रमिक पुस्तकें.

इस विद्यालय में पं० विष्णु दिगंबरजीनें संगीत विद्यापर आज तक जो किताब तयार किइ उनके नाम और किंमत.

	भाग	रु	आ
महिला संगीत हिंदी.	१२	०	६
संगीत तत्वदर्शक	३	०	८
[illegible] अलंकार.	१	०	८
हारमोनियमप्रकाश हिंदी और उरदू	१३	२	४
" " [illegible]	१४	१	४
संगीत बालबोध हिंदी और उर्दू	१	१	८
" " द्वितीय भाग	७	१	०
स्वल्पालाप गायन	१३	३	१२
राग प्रवेश	११२	११	०
व्यायामके साथ संगीत.	१२	१	०
संगीत प्रथम भाग हिंदी		२	०
" द्वितीय		३	०
राग भैरव		२	०
राग [illegible]		२	०
राग भूपाली		६	०
भजन और तबलेकी पुस्तक		१	०
सितारकी पुस्तक	१०	६	०
राष्ट्रीय शिक्षा भारत हितकर गायन		१	०
भजनामृत लहरी	१५	०	[illegible]
राम [illegible]		०	-

इनके सिवाय और पुस्तकोंके लिये पत्रव्यवहार करो

मॅनेजर

गांधर्व महाविद्यालय.

॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न ॥

महिला संगीत,

द्वितीय भाग.

मुद्रक और प्रकाशक

श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्युझिक, डायरेक्टर.

गांधर्व महा विद्यालय-बंबई द्वारा रचित

सन १९१६.

प्रथमावृत्ति प्रती १००० मुल्य ४ आना.

"गांधर्व महा विद्यालय,, प्रेस सँडहर्स्ट रोड-बंबई."

प्रस्तावनिका.

यह महिला संगीत पुस्तक बनाने का मुख्य उद्देश यह है की, कन्याओं मे संगीत विद्या का प्रचार सुलभतासे हो. तथा घर घर मे ईश्वर गुणानुवाद गायन के साथ गाने लग जाय. और वह गायन विद्या आसानी मे कन्याओं को प्राप्त हो जावे. इस पुस्तक में केवल प्राथमिक जो गायन विद्या सिखने का क्रम होता है. वह सुलभता से लेखन पद्धती के अनुसार लिखा गया. इस पुस्तक के सिखने से गायन विद्या की क्रम क्रम सेउच्च श्रेणी मिखनेके लिये आसानी होगी. खास कन्याओंके शिक्षण के लिये यह पुस्तक बहोतही उपयोगी होगा. इस किसम का पुस्तक बनाने के कार्य मे मेरे मित्र लाला देवराजजी प्रेसिडेंट कन्या महा विद्यालय जालंधर में कन्या तथा स्त्रियों के उपयुक्त गीत दिये इस लिये मै उनका बहोत बहोत धन्यवाद मानता हूं अब सब सज्जनों से निवेदन है की वह अपनी कन्याओं को इस महिला संगीत पुस्तक से गान विद्या का शिक्षण देंगे जिससे उन के गृह की शोभा बढ जाय.

भवदिय,

पं. विष्णु दिगंबर.

महिला संगीत.

भाग २ रा.

पाठ. १. ला.

प्र०-आर्ध मात्राका नाम क्या ?

उत्तर-द्रुत.

प्र०-द्रुत का चिन्ह कैसा होता है, लीपके रस्तार ?

उत्तर-(०) इस प्रकार होता है.

प्र०-द्रुत के लयकारी को कैसा गिनना ?

उत्तर-हातमे एक ताली देके मुखमे एक दो ऐसा कहना, इस हिसाब से ताली के साथ एक कहा जाय और हात उठाते समय दो कहा जाय, जिसे हिसाब ठीक होजाय.

शि०सु०-विद्यार्थीयोंके इस द्रुत लयका ज्ञान होने के वास्ते बहोत वखत शिक्षकोने खुद ताल देके, उनके मुखसे एक दोका उच्चारण कराना चाहि. द्रुत लयकारी तयार होनेके बाद नीचेके उदाहरण विद्यार्थियोंसे करालेने.

उदाहरण १.

(१) सग, मध, धरे, (२) सरे, गध, पम, (३) सम, रेप, गध, (४) सरे रेग, गम, मर, पर, (५) धप, पम, मग, गरे, रेसा, (६) सारेग, रेगम, गमप, मपध, (७) धपन, पमग, मगरे, गरेसा, (८) सारेगम, रेगमप, गमपध, (९) धपमग, पमगरे, मगरेसा, (१०)' स ग रे म ग प म ध (११) धम पग मरे गस (१२) सरे सग सम सप (१३) सध, धप, धम, धग, धरे, धसा,

शि. सु. उपर लिखेहुवे स्वरों को सिखलाने के बाद उसी स्वरों मे से अलग अलग स्वर विद्यार्थीयों को पूछना वह यह प, रे, ध, ग, स, म, इत्यादि, इस प्रकार जब ठीक स्वरो मे आवे तो नीचे लिखी हुई सारिगम जिस लयकारी मे दीई है उसी लयकारी मे सिखलानी.

तार	
मध्य	स रि स ग स म ग रि प ऽ
मन्द्र	

ऽ इस चिन्ह का नामः--गुरु विश्रानी है. यह चिन्ह जिस जगे आवेगा. वहा स्वरों का उच्चारण न करके. केवल दो मात्रा

पाठ २ रा.

तार	
मध्य	ध स प ग स रि स रि ग ग प ध T स
मन्द्र	

तार	
मध्य	स रि ग म प स
मन्द्र	

T इस चिन्हका नामः–लघुविश्रांती है. जिस जगे यह चिन्ह आवेगा. वहा स्वर का उच्चारण न करके केवल एक मात्रातक दम लेना.

तार	
मध्य	ध प ध म ऽ ध म ग रि T स रि ग म
मन्द्र	

तार	
मध्य	प ध ा म रि ग म प ा म रि ग म ा स ऽ ा
मन्द	

तार	
मध्य	प म ध म प स रि ग र ा प स ध ग
मन्द	

तार	
मध्य	प स रि ग म ा ग रि म ग रि न रि ग
मन्द	

नंबर १.

मध्य	सरिगमपधनि धपमग रिस,

नंबर २.

मध्य	सरिग, रिगम, गमप, मपध, पधनि,

मध्य	धपध, धमप, मगरु, गरिग, रिसरि, सं.

नंबर ३.

मध्य	सग, रिम, गप, मध, पनि, नि ,

मध्य	धम, पग, मरि, गस,

नंबर ४.

मध्य	सरिगम, रिगमप, गमपध, मप

मध्य	धनि, निधपम, धपमग, पमगरि,

मध्य	मगरिस,

नंबर ५.

मध्य	सरिगमप, रिगमपध, गमपधनि,

मध्य	निधपमग, धपमगरि, पमगरिस,

नंबर ६

मध्य	सरिगमपध, रिगमपधनि, निधपम

मध्य	गरि, धपमगरिस,

शि० सू०—उपर के स्वर विद्यार्थियोंको ठीक याद होनेके बाद, उसमेंसे अलग अलग, स्वर कठसे निकालनेको कहेना चाहिये जिसे उनको स्वर लगाने की सुगमता होगी.

उदाहरण.

ग ग ग ग ग ग ग म ग रि रि रि रि रि रि
ग स प प प प प प प प ध प म रि ग म प ध
नि स

१ स रि ग स रि ग स रि ग म प ग म प
ग स प ग म प ध नि स रि ग म प ध नि ध
प म ग रि स

इस वाद्यका नाम तानपुरा (तंबुरा) है. इसमें चार तारे लगाई जाती है. पहिलीतार पीतलकी दुसरी दो तारे पोलादकी (स्टीलकी) और चौथी पीतलकी तार होती है. बीच की जो दो तारे होती है उसे थोडी पहिली बटी चाहिये और उसे जादा ४ थी बडी चाहिये.

बिचके तारोंको मध्यके षड्जमें मिलाया जाता है और पहिली जो पितलकी तार होती है उसको मंद्र के पंचममें मिलाया जाता है और चौथी तार जो है उसको मंद्रके षड्ज में मिलाया जाता है इस तंबोरेका उपयोग स्वर के गाने या गानेके साथ किया जाता है.
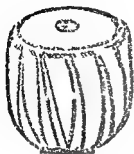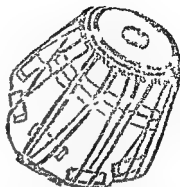
इस वाद्यका नाम तबला और बाया करके है दाहने हाथके तरफ जो है उसका नाम तबला ओर बांये हात के तरफ जो है उसका नाम बाया इस तबले बायेको गानेके साथ या किसिवाद्य के साथ लयकारी में बजाया जाता है जिसे गाना बजाना कानको अधिक अच्छा मालूम होता है.

हारमोनियम.

इस वाद्यका नाम हरमोनियम है, यह वाद्य गाने के साथ

तार		
मध्य	ग म रि ग स . . स म	ग
मन्द्र	नि नि नि नि	

को ॰ ई ॰ म र वि द्या प ढा वे
२ ३ २ १

तार		
मध्य	म ग रि स ॰ ध स ग म प ॰ ध प ध	ग
मन्द्र		

ला सा ॰ री ध र्म के सा इ ये ॰ जा
२ ३ २ १

तार		
मध्य	ध प ग म रि ग स	
मन्द्र	नि	

॰ ॰ वे ॰ सा ॰ री ॰
२

राग. खमाज.

ताल घुमाली.

तार	सु सु
मध्य	सु सु गु गु गु मु पु पु पु पु पु॰४ नि
मन्द्र	

भां ति भां ति के ॰ फु ल खि ले है भ ई मैं

तार	सु
मध्य	धु ४नि धु मु पु मु ४नि धु पु ॰ ४ नि
मन्द्र	

भ फ न्दि म दे ॰ ख इ न्दे फ मां

तार	
मध्य	ग ४ स - ४ ४ स ल ४ ४
मन्द्र	नि १ नि

दि या मा ख को

तार	
मध्य	स ग ग ग ग ग ग म ग ग प ग प प
मन्द्र	

सू र ज को जो ती दे ता दे र हा रू प है

तार	स स
मध्य	ग ध ध प नि नि प प ध प ध
मन्द्र	

फू ल न को प क्षी ना ना फ ल दे ना ना

तार	रि रि सु • ४
मध्य	गु गु मू पु पु धु नि नि
मन्द	

हि त है फ र ता ज न ज न फो

तार	
मध्य	मु गु गु सु गु गु सु गु सु गु पु
मन्द	

वृ क्ष हि सुं द र औ र ल ता से

तार		
मध्य	प म • ४ ग रि ग • ९	नि नि नि •
मन्द्र	• •	

• ण हो • • च क्षु के
१ २ ३ २

तार		स	
मध्य	नि नि	नि ४नि ४नि ध प	म ग म
मन्द्र			

तु म च क्षु भ ग व न का न के
२ ३ २ २ ३ ०

तार		स	
मध्य	प ध	प ध स ग ९ ९	
मन्द्र			

तु म का • न हो •
० ३ २ २

श्रेणी ५ वी.

ताल धुमाली.

तार	
मध्य	पु • धु पु मु गु रि पु • धु पु मु गु रि पु •
मन्द्र	
	ध न्य है • म श्रु ना म ते • रा • ध

तार	
मध्य	धु पु मु गु रि गु • मु पु • ४ गु • मु गु
मन्द्र	
	न्य त व क रुणा ह री ध न्य पि

तार	•
मध्य	गु रि रि पु • धु पु सु गु रि गु • पु सु गु
मन्द्र	

तु व तस्ने ह ते • रा • जो न त्या •

तार		
मध्य	रि सु गु रि सु ऽ • ४	
मन्द्र	नि	

गा • तु म क मीं

राग भीमपलासी.

ताल रूपक.

तार		
मध्य	प म ध प ग ग रि स • ऽ	रि
मन्द्र		नि •

ध • न्य • तू • क र   ता •

३   २   २   ३

तार		
मध्य	स • ऽ म ग • ऽ रि स • ऽ	म रि स
मन्द्र		

र   म •   रा •   ध न्य •

१   २   २   ३

तार		
मध्य	म ग • म	स स स
मन्द्र	नि नि	नि • स

तू • • प र मे • • श्व र
२ २ ३

तार		
मध्य	स म ग • म प	प प प ग म
मन्द्र	नि •	

• • • • • • धन्य स्र ष्टी •
२ २ ३ २

तार	स स • ऽ ऽ	स स
मध्य	प नि नि	नि नि
मन्द्र		

क र ता है तू को न म हि
३ २ २ ३ २

तार	स़ • ऽ ऽ	स़ म़ ग़ रि स़ • ऽ ॽ
मध्य		नि़
मन्द्र		

मा   गा • स के • •
२   ३   २   २

तार	स़ स़ रि स़ •	
मध्य	नि़ नि़ ध़ प़	
मन्द्र		

व्या स हे • • तू • •
३   २

१. और २ के अंक इसवाले दिये है पहिले गाते समय १ अंक के निषाद तक गाकर फिर पहिले से गाना और १ अंक को छोड़कर २ अंक को लेके आगे चलना.

कल्याणी खमाज.

सबने मिलके गाना.

तार	
मध्य	म ग रि स रि ग ग ग ग ग रि रि ग
मन्द्र	

ह • री • • सु ध लीजीये • म

तार	
मध्य	म म • स स ा स प प ४ नि ध
मन्द्र	ध

• री ग ई • अ व स र ण

तार		
मध्य	म ग	ग म ध ध ध ध ध ⋎ नि ध प ▲ म
मन्द्र		

री म श्रु तू हि ज ग त का रा

तार	
मध्य	प ऽ ग म प ▲ म प ▲ म प ▲ म प
मन्द्र	

जा य ह स ब कु छ तु म रा

तार		
मध्य	रि रि ग म प म ग	
मन्द्र		

है का जा

सिंध भैरवी.

ताल धुमाळी.

तार		
मध्य	स ४ ध प प ४ ध	म म प ४ ग स
मन्द्र		

आ वो ४ हि नो य हि नो प्या री
१ २ ३ २ १ २ ३ २

तार		
मध्य	प ४ नि ४ नि ४ ध प म	४ ग रि ४ ग रि
मन्द्र		

ई श्व र के द्दग गुण गा.
१ २ ३ २ १ २

भैरवी.

(सबने मीलाके गाना.)

तार		
मध्य	प प प प	ऽध ऽनि ऽध प ऽ ग म
मन्द्र		
	र चा म स्रु १ २	तु ॰ ने ॰ य ह १ २

तार			
मध्य	प ऽनि ऽध प ऽ ग म	रि म ऽ ऽ	स
मन्द्र			
	ब्रं ॰ ह्मा ॰ ॰ न्ड १ २	सा रा १ २	मा १

तार		
मध्य	५ग ५ग ५ग ऽ	स ५ग म प ५ग म
मन्द		

णो से प्या रा
२ १ २

तार		
मध्य	प५नि५ध प म५ग	म ५ग ५रि स
मन्द		

तु हि स व से न्या रा
१ २ १ २

तार		स स ऽऽ	
मध्य	५ध म ५ध ५नि		५नि५नि
मन्द			

तु हि भा ई ब धु तु हि
१ २ १ २ १

तार	स़ स़ स़	ॱरि़ स़	म़ ॱरि़
मध्य		ॱनि़ ॱध़ प़	
मन्द्र			

ज ग त ज न नी ॰ ॰ म फ

२ १ २ १

तार	स़ स़	
मध्य	ॱनि़ ॱनि़	ॱध़ ॱनि़ ॱध़ प़ ॱध़
मन्द्र		

ल ज ग त म ॰ ॰ ए ॰

२ १ ॰ २

तार			
मध्य	प़	म़ ▲म़ म़ रि़ ॱग़ म़	ॱरि़म़ प़ ॱ
मन्द्र			

फ त ॰ ॰ रा ॰ प सारा

१ २ १ २

अकेलेने गाना.

तार	
मध्य	४ नि धु ४ नि धु ४ नि धु पु धु मु · ४ म
मन्द्र	
	ध मं दु ध स . . . ' मा

तार	सू
मध्य	पु पु पु पु ४ धु ४ नु ४ धु ४ नि ४ धु ग·१
मन्द्र	
	ता तु म ह म को . पा . . लो

तार	
मध्य	पु पु ४ नि ४ धु पु मु मु रि मु पु ४ धु
मन्द्र	
	दे वो खो . ल वि या का . .

तार
मध्य
मन्द्र
अ प ने
तार
मध्य
मन्द्र
भ हा रा

राग आसावरी.

तार	सु
मध्य	पु ४ नि ४ धु पु ४ धु मु पु ४ धु मु पु
मन्द्र	

हे • • भ भू पू • र • ण •

३ २

तार	
मध्य	४ गु सु रि मु मु प पु • ४ म पु ४ ध ४ धु
मन्द्र	

ना • • थ ह मा रे कौ न कौ न

३ २ ३ २

तार	सु सू	सु सु रि ψ गू रि सु सु रि सु
मध्य		ψ नि ψ नि
मन्द्र		

गु ण क हे • • तु • म्हा • • • रे
१ २

तार		
मध्य	ψ धु पु मु	मू प ψ ध ψ धू ψ धू ψ धू
मन्द्र		

• • • द या ते री ह री
३ २

तार	सु सु सू ψ ग ψ गु
मध्य	ψ धु ψ धू ψ नि
मन्द्र	

अ प र पा • रा तू नि

तार	४गृ रि सृ	सृ सृ सु रि सु
मध्य		४नि ४नि
मन्द्र		

प भू है द या। म हा। . . .
२ १ ०

तार		
मध्य	४नि ४ धु पृ सु	
मन्द्र		

रा . . .

{ समाप्त. }

राग भिमपलासी.

धन्य तू करतार मेरा इस भजन के अंतरे के अखेर की दो लाईन रही थी वह आगेके माफक. यह दो लाईन ब्याप्त है तूं इसके साथ जोडकर गाना और फेर पिछे अस्ताई बोलना.

तार		
मध्य	ध़ प़ म़ ग़ म़ म़	स़ स़ ग़ म़ म़ •१
मन्द्र		नि़

ज ग त मा • ही गु ण न ते • रं
३ २ २ ३ २ २

तार	स
मध्य	ग म प नि नि ध प म ग रि स •४
मन्द्र	

पा • • • • • स • के • • •
३ • • २ १ २

गांधर्व महा विद्यालय.

क्रमिक (series) पुस्तकें.

इस विद्यालयमें पं. विष्णु दिगंबरजीने संगीत विषयपर आजतक जो किताबें तय्यार की है उनके नाम और किंमत.

	भाग.		रु.	आ.
बालोदय संगीत हिंदी.	१	...	०	२
,, ,, मराठी.	१	...	०	४
महिला संगीत हिंदी.	१-२	...	०	६
राम नामावली		...	०	२
संगीत तत्वदर्शक.	१	...	०	८
अंकित अलंकार	१	...	०	८
हारमोनियमप्रकाश हिंदी और उरदू	१	...	०	८
,, ,, ,,	२	...	०	१२
,, ,, ,,	३	...	१	०
,, केवल हिंदीमें	४	—	१	४
संगीत बालबोध हिंदी और उरदू.	१	...	१	८
संगीत बालबोध द्वितीय भाग.	२	...	१	०
स्वल्पालाप गायन.	१	...	१	०
रागप्रवेश.	१-१३	...	११	०
व्यायामके साथ संगीत.	१-२	...	१	८
संगीत प्रथम भाग हिंदी		...	२	०
,, द्वितीय ,, ,,		...	३	०
राग भैरव.		...	२	०
राग मालकंस.		...	२	०
मृदंग और तबलेकी पुस्तक.		...	१	०
सतारकी पुस्तक हिंदी		...	१	०
,, उरदू.		...	०	८
नारदीयशिक्षा भाषा टीका समेत हिंदी.		...	१	०
भजनामृत लहरी.	१-५...		२	८

मॅनेजर
गांधर्व महा विद्यालय, बंबई.

Printed by Pt Vishnu Digamber Paluskar at "Gandharva Maha Vidyalaya Press" Sandhurst Road, Bombay, and Published by Pt. Vishnu Digamber Paluskar, Director Gandharva Maha Vidyalaya Bombay.

अंकित अलंकार.

(प्रथम भाग.)

संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक
श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.
गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्यूझिक, प्रिन्सिपॉल.
गांधर्व महा विद्यालय- बंबई द्वारा रचित.

चतुर्थावृत्ती प्रती २०००. मूल्य ८ आना

[illegible] सँडहर्स्ट रोड, मुंबई

॥ श्री गुरु प्रसन्न. ॥

उद्देश.

प्रायः देखा गया है की जो सज्जन गायन विद्या सीखने का प्रेम रखते हैं और किसी गायक से गायन सीखना शुरू करते हैं, उस समय उन के दिल में जरूर यह विचार आता रहिता है कि, हम जल्दी से तान आलाप को गाना शुरू कर दें, परंतु यह उन की अभिलाषा पुरी होने में बहुत कठिणता पडती है. यह बात पर जब हमने अपने मन में विचार किया तब यह मालुम हुवा कि कोई ऐसी पुस्तक बनाई जाय की जिस के पढने में और उस पर से अभ्यास करने से उन की अभिलाषा पुरी हो जाय इस लिए हमने ' तान ' के पुस्तक को प्रकाशित किया है. इस पुस्तक के दो भाग होंगे जिस में से यह पहिला भाग प्रकाशित करते हैं. हम उमेद करते हैं कि इस पुस्तक से संगीत प्रेमी लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रम को कृतार्थ करेंगे.

भवदीय

विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

अनुक्रमणिका.

☞ हमारे यहा के लेखनपद्धती (नोटेशन सिस्टम्) को समजने के लिये **संगीत तत्त्वदर्शक** को पढना चाहिये.

अवश्यक सूचना.

इसमें जो अलंकार लिखे है उनको गानेमें तयार करने के लिए निम्न लिखित क्रम के अनुसार करना चाहिए.

प्रथम जो **स रि ग म** ऐसन पद्धती पर लिखे है उस को लय के साथ कह कर तत् पश्चात् **आ इ उ ए** इन अक्षरों में से हरएक अक्षर को ले के उन्ही स्वरों में आलापना चाहिए

उदाहरण.

स्वर	सा	रि	ग	म	प	ध	नि	ध	प	म	ग	रि	स.
अलाप	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	अ.

इसी तरह और अक्षरों को भी गानेमें करना होगा

इस में जितने अलंकार लिखे है वह केवल शुद्ध ही रागों में है उनको **भैरव, भैरवी, मालकंस, हिंडोल, सारंग. फोंझिया, भूपाली, कल्याण, पूरिया.** ये रागों में तान आलाप करने के लिये आगे लिखे हरएक राग के नियम को देखने से कौनसे स्वर वर्ज करना या कौनसे कोमल. तीव्र अथवा [illegible] करना चाहिए यह मालुम होगा

राग भूपाली.

इस में मध्यम और निषाद वर्ज, बाकी सब शुद्ध स्वर.

स रि ग प ध स ध प ग रि स

राग कल्याण.

इस में केवल मध्यम तीव्रतर बाकी के सब शुद्ध स्वर.

स रि ग म प ध नि स नि ध प म ग रि स

राग पूरिया.

इस में पंचम वर्ज, रिषभ धैवत अतिअतिकोमल म तीव्रतर, गधार और निषाद शुद्ध.

स रि ग म ध नि स नि ध म ग रि स

राग भैरव.

इस में रिषभ, धैवत अतिकोमल बाकी के सब शुद्ध स्वर.

स रि ग म प ध नि स नि ध प म ग रि स

राग भैरवी.

इस में रिषभ, गधार, धैवत, निषाद, अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर

स रि ग म प ध नि स नि ध प म ग रि स

राग मालकंस.

इस में रिषभ, पचम वर्ज. गधार, धैवत, निषाद कोमल, मध्यम शुद्ध

स ग म ध नि स नि ध म ग स

राग सारंग.

इस में गधार धैवत वर्ज निषाद दो एक शुद्ध और अतिकोमल, बाकीके सब शुद्ध स्वर.

स रि म प नि स नि प म रि स

राग हिंडोल.

इस मे रिषभ, पचम वर्ज. मध्यम तीव्रतर, बाकीके सब शुद्ध स्वर.

स ग म ध नि स नि ध म ग स

राग कौशिया.

इस में सब शुद्ध स्वर.

स रि ग म प ध नि स नि ध प म ग रि <u>स</u>

राग तोडी.

इस में रिषभ, गधार धैवत अतिकोमल मध्यम तीव्रतर
बाकीके सब शुद्ध स्वर.

नि रि ग म ध नि स नि ध प म ग रि <u>स</u>

राग विभास.

इसमें रिषभ, धैवत अतिकोमल. मध्यम, निषाद वर्ज
बाकीके सब शुद्ध स्वर.

स रि ग प ध स ध प ग रि <u>स</u>

॥ श्रीगुरु प्रसन्न. ॥

अंकित अलंकार

तान और आलाप सब प्रकार से सुदर और मनोहर होने के लिये दो बातों का होना जरूरी है एक तो यह की वही तान व आलाप वार २ न आये और दूसरे तान व आलाप के स्वर यथा क्रम हो इस के वास्ते स्वरों का नियमबद्ध होना अत्यावश्यक है इस के लिये शास्त्रकारों ने अलकार बनाये हैं परन्त वह अ-न्कित न होने से उपयोग में नहि लये जा सक्ते अत वह अल-कार इस पुस्तक में विस्तार पूर्वक अंकित लिखे है सगीत रसीक तान व आलाप के तयार करने के लिये इन अल्कारों को यथा विधि अभ्यास करेंगे तो बहुत लाभकारी होगा. ॥

नंबर १.

तार		
मध्य	सु रि ग रि सु • ४	सु रि ग म ग रि
मन्द्र		

तार		
मध्य	स • ॅ	स रि ग म प म ग रि स • Y
मन्द्र		

तार	
मध्य	स रि ग म प ध प म ग रि स • ॅ
मन्द्र	

तार	
मध्य	स रि ग म प ध नि ध प म ग रि स•Y
मन्द्र	

तार	स
मध्य	स रि ग म प ध नि नि ध प म ग
मन्द्र	

तार		स रि
मध्य	रि स · ४	स रि ग म प ध नि
मन्द्र		

तार	स	
मध्य	नि ध प म ग रि स · ४	स रि ग
मन्द्र		

तार	सु रि गु रि सु
मध्य	मु पु धु नि नि धु पु मु गु
मन्द्र	

तार		सु रि
मध्य	रि सु . ४	सु रि गु मु पु धु नि
मन्द्र		

तार	गु मु गु रि सु
मध्य	नि धु पु मु गु रि सु . ४
मन्द्र	

तार	स रि ग म प म
मध्य	स रि ग म प ध नि
मन्द्र	

तार	ग रि स
मध्य	नि ध प म ग रि स•४
मन्द्र	

नंबर- २

तार	
मध्य	स रि स रि ग रि ग म ग म प म प ध प
मन्द्र	

तार	स़ स़ स़ स़
मध्य	ध़ नि़ ध़ नि़ नि़ नि़ नि़ नि़ ध़ नि़
मन्द्र	

तार	
मध्य	ध़ प़ ध़ प़ म़ प़ म़ ग़ म़ ग़ रि़ ग़ रि़ स़
मन्द्र	

तार		
मध्य	रि़ स़ • *	स़ रि़ स़ रि़ ग़ रि़ ग़ म़ ग़ म़
मन्द्र		

तार	स स रि स
मध्य	प म प ध प ध नि ध नि नि
मन्द्र	

तार	स
मध्य	नि नि ध नि ध प ध प म प म ग म
मन्द्र	

तार		
मध्य	ग रि ग रि स रि स • [illegible]	स रि स रि ग
मन्द्र		

तार														
मध्य	रि	ग	म	ग	म	प	म	प	ध	प	ध	नि	ध	नि
मन्द्र														

तार	स		स	रि	स	रि	ग	रि	स	रि	स		स	
मध्य		नि										नि		नि
मन्द्र														

तार														
मध्य	ध	नि	ध	प	ध	प	म	प	म	ग	म	ग	रि	ग	रि
मन्द्र														

स रि स • ॠ	स रि स रि ग रि ग म ग

स स रि
म प म प ध प ध नि ध नि नि

स रि ग रि ग म ग रि ग रि स रि स
नि

तार	स
मध्य	नि ध नि ध प ध प म प म ग म
मन्द्र	

तार		
मध्य	रि ग रि स रि स. ॠ	स रि स रि ग
तार		

तार	
मध्य	ग म ग म प म प ध प ध नि ध।नि
मन्द्र	

तार	स़ रि़ स़ रि़ ग़ रि़ ग़ म़ ग़ म़ प़ म़ ग़
मध्य	नि़
मन्द	

तार	म़ ग़ रि़ ग़ रि़ स़ रि़ स़ स़
मध्य	नि़ नि़ ध़ नि़ ध़
मन्द	

तार	
मध्य	प़ ध़ प़ म़ प़ म़ ग़ म़ ग़ रि़ ग़ रि़ स़ रि़ स़. ए
मन्द	इति म:

नंबर. ३

तार	
मध्य	स़ ग़ ऱि स़ ऱि म़ ग़ ऱि ग़ प़ म़ ग़ म़
मन्द्र	

तार	स़
मध्य	ध़ प़ म़ प़ ऩि ध़ प़ ध़ ऩि ध़ ध़ ऩि
मन्द्र	

तार	स़
मध्य	ध़ प़ ध़ ऩि प़ म़ प़ ध़ म़ ग़ म़ प़
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग़ ऱि ग़ म़ ऱि स़ ऱि ग़ स़ ॰ ॅ | स़ ग़ ऱि
मन्द्र	

तार	
मध्य	स़ ऱि म़ ग़ ऱि ग़ प़ म़ ग़ म़ ध़ ऽ म़
मन्द्र	

तार	स़ ऱि स़
मध्य	प़ ऩि ध़ प़ ध़ ऩि ध़ ऩि ऩि ऩि
मन्द्र	

तार	स रि स
मध्य	नि ध नि ध प ध नि प म प ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	म ग म प ग रि ग म रि स रि ग स · प
मन्द्र	

तार	
मध्य	स ग रि स रि म ग रि ग प म ग म
मन्द्र	

तार	सु रिसु
मध्य	धु पु मु पु नि धु पु धु नि धु नि
मन्द्र	

तार	सु गु रि सु सु रि गु सु सु रि
मध्य	नि नि नि धु
मन्द्र	

तार	सु
मध्य	नि धु पु धु नि पु मु पु धु मु गु मु पु
मन्द्र	

तार												
मध्य	ग	रि	ग	म	रि	स	रि	ग	स	. ४	स	ग
मन्द्र												

तार													
मध्य	रि	स	रि	म	ग	रि	ग	प	म	ग	म	ध	प
मन्द्र													

तार							स				रि	स	
मध्य	म	प	नि	ध	प	ध		नि	ध	नि			नि
मन्द्र													

तार	स़ ऩ ऱि स़ ऱि ऩ ग़ ऱि ऱि ग़ म़ ऱि स़ ऱि
मध्य	
मन्द्र	

तार	ग़ स़ स़ ऱि स़
मध्य	ऩि ऩि ध़ ऩि ध़ प़ ध़ ऩि प़ म़
मन्द्र	

तार	
मध्य	प़ ध़ म़ ग़ म़ प़ ग़ ऱि ग़ म़ ऱि स़ ऱि ग़
मन्द्र	

तार		
मध्य	सु • ४	नुमुड़िनुड़िनुगुड़िगुसुगु
मन्द		

	नु
	नुधुनुसुनुड़िधुपुधु ड़ि धु ड़ि

गुनुड़िनुड़िनुनुड़िगुपुगु

नंबर. ३

तार	प्रकार. २
मध्य	स स ग ग रि रि स स रि रि म म ग ग
मन्द	

तार	
मध्य	रि रि ग ग प प म म ग ग स म ध ध प
मन्द	

तार	स स
मध्य	प स म प प नि नि ध ध प प ध ध
मन्द	

तार	सु सु
मध्य	नि नि ध ध ध ध नि नि · ध ध
मन्द	

तार	
मध्य	प प ध ध नि नि प प म म प प ध ध
मन्द	

तार	
मध्य	म म ग ग म म प प ग ग रि रि ग
मन्द	

तार	
मध्य	ग म म रि रि स स रि रि ग ग सस॰
मन्द्र	

तार	
मध्य	स स ग ग रि रि स स रि रि म म ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग रि रि ग ग प प म म ग ग म म ध ध
मन्द्र	

तार	स स
मध्य	प प म म प प नि नि ध ध प प ध ध
मन्द्र	

तार	रि रि स स
मध्य	नि नि ध ध नि नि नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	स स रि रि स स
मध्य	नि नि ध ध नि नि ध ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	प प ध ध नि नि प प स स प प ध ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	स ग ग म म प प ग ग रि रि ग ग म
मन्द्र	

तार		
मध्य	रि रि स स रि रि ग ग स स॰	स स
मन्द्र		

तार	
मध्य	ग रि रि स स रि रि म म ग ग रि रि ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग प प स म ग ग म ध ध ध प प म म
मन्द्र	

तार	स स
मध्य	प प नि नि ध ध प प ध ध नि नि ध
मन्द्र	

तार	रि रि स स स स ग ग रि
मध्य	ध नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	रि स स स स रि रि ग ग स स
मध्य	नि नि
मन्द्र	

तार	स स रि रि स स
मध्य	नि नि ध ध नि नि ध ध
मन्द्र	

तार															
मध्य	प	प	ध	ध	नि	नि	प	प	म	म	प	प	ध	ध	म
मन्द्र															

तार															
मध्य	म	ग	ग	म	म	प	प	ग	ग	रि	रि	ग	ग	म	म
मन्द्र															

तार															
मध्य	रि	रि	स	स	रि	रि	ग	ग	स	स	४	| ग	स	ग
मन्द्र															

तार															
मध्य	ग	रि	रि	स	स	रि	रि	म	म	ग	ग	रि	रि	ग	ग
मन्द्र															

तार																
मध्य	प	प	म	म	ग	ग	म	म	ध	ध	प	प	म	म	प	प
मन्द्र																

तार									स	स				
मध्य	नि	नि	ध	ध	प	प	ध	ध			नि	नि	ध	ध
मन्द्र														

तार	रि रि स म स स ग ग रि रि
मध्य	नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	स स रि रि म म ग ग रि रि रि रि ग ग
मध्य	
मन्द्र	

तार	म म रि रि स स रि रि ग ग स स
मध्य	नि नि
मन्द्र	

तार															
मध्य	ग	रि	रि	स	स	रि	रि	म	म	ग	ग	रि	रि	ग	ग
मन्द्र															

तार																
मध्य	प	प	म	म	ग	ग	म	म	ध	ध	प	प	म	म	प	प
मन्द्र																

तार									स	स				
मध्य	नि	नि	ध	ध	प	प	ध	ध			नि	नि	ध	ध
मन्द्र														

तार	रि रि सु मु सु सु गु गु रि रि
मध्य	नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि रि रि गु गु
मध्य	
मन्द्र	

तार	मु मु रि रि मु मु रि रि गु गु मु मु
मध्य	नि नि
मन्द्र	

तार	सु	सु	रि	रि							सु	सु		
मध्य					नि	नि	धु	धु	नि	नि			धु	धु
मन्द्र														

तार																
मध्य	पु	पु	धु	धु	नि	नि	पु	पु	मु	मु	पु	पु	धु	धु	मु	मु
मन्द्र																

तार														
मध्य	गु	गु	मु	मु	पु	पु	गु	गु	रि	रि	गु	गु	मु	मु
मन्द्र														

तार		
मध्य	रि रि सु सुरि रि गु गु सु सु	सु सु गु गु
मन्द्र		

तार	
मध्य	रि रि सु सु रि रि मु मु गु गु रि रि गु गु
मन्द्र	

तार	
मध्य	पु पु मु मु गु गु मु मु धु धु पु पु मु मु पु पु
मन्द्र	

तार	स स
मध्य	नि नि ध ध प प ध ध नि नि ध ध
मन्द्र	

तार	रि रि स स स स ग ग रि रि
मध्य	नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	स स रि रि म म ग ग रि रि ग ग प प म
मध्य	
मन्द्र	

तार	म	ग	ग	ग	ग	म	म	प	प	ग	ग	रि	रि	ग	ग
मध्य															
मन्द्र															

तार	म	म	रि	रि	स	स	रि	रि	ग	ग	स	स		
मध्य													नि	नि
मन्द्र														

तार	स	स	रि	रि							स	स		
मध्य					नि	नि	ध	ध	नि	नि			ध	ध
मन्द्र														

तार	
मध्य	प प ध ध नि नि प प म म प प ध ध म
मन्द्र	

तार	
मध्य	म ग ग म म प प ग ग रि रि ग ग स स
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि रि स स रि रि ग ग स स ँ
मन्द्र	इति सोमः

नंबर ५.

तार	
मध्य	सु गु रिु गु मु गु रिु सु रिु मु गु मु पु मु
मन्द्र	

तार	
मध्य	गु रिु गु पु मु पु धु पु मु गु मु धु पु धु
मन्द्र	

तार	सु
मध्य	निु धु पु मु पु निु धु निु निु धु पु पु धु निु
मन्द्र	

तार	सु
मध्य	नि ध नि प म प ध नि ध प ध म
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग म प ध प म प ग रि ग म प म ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	म रि स रि ग म ग रि ग स ॐ
मन्द्र	इति ग्रीवा

नंबर. ६

तार	
मध्य	सु गु रि मु मु गु रि सु रि मु गु पु पु मु गु
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि गु पु गु धु धु पु मु गु मु धु पु नि नि धु
मन्द्र	

तार	सु सु सु
मध्य	पु गु पु नि धु नि धु पु पु धु नि
मन्द्र	

तार	सु
मध्य	ध नि प म प प नि ऽ ऽ ध म ग म प
मन्द्र	

तार	
मध्य	ध ध म प ग रि ग म प ऽ ग म रि स रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग म म रि ग सु ॰
मन्द्र	इति भाल

तार	
मध्य	सु सु रि रि गु गु मु गु रि गु रि [illegible] रि गु
मन्द्र	

तार	
मध्य	गु मु मु पु मु गु मु गु रि गु गु मु [illegible] पु पु
मन्द्र	

तार	
मध्य	धु पु मु पु मु गु मु मु पु पु धु धु नि धु पु धु
मन्द्र	

तार	स
मध्य	प म प प ध ध नि नि नि ध नि ध प
मन्द	

तार	स
मध्य	ध नि ध नि नि नि ध ध प प म प ध
मन्द	

तार	
गंध्य	प ध नि ध ध प प म म ग म प सं प ध प प
मन्द	

तार	
मध्य	मु मु गु गु रिु गु मु गु मु पु मु मु गु गु रिु रिु
मन्द्र	

तार	
मध्य	सु रिु गु रिु गु मु गु गु रिु रिु सु सु ॰
	इति प्रकाश
मन्द्र	

नम्बर ७.

तार	सु सु
मध्य	सु रिु गु मु पु धु निु निु धु पु मु गु रिु सु ॰
	इति निर्म्माण.
मन्द्र	

तार													
मध्य	स̮	स̮	रि̮	रि̮	ग̮	ग̮	म̮	म̮	प̮	प̮	ध̮	ध̮	नि̮	नि̮
मन्द्र													

तार	स̮	स̮	स̮	स̮									
मध्य					नि̮	नि̮	ध̮	ध̮	प̮	प̮	म̮	म̮	ग̮
मन्द्र													

तार		
मध्य	ग̮ रि̮ रि̮ स̮ स̮ ॅ	इति निकर्ष
मन्द्र		

नंबर ८.

तार	
मध्य	स स स रि रि रि ग ग ग म म म प प प
मन्द्र	

तार	स स स स स स
मध्य	ध ध ध नि नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	
मध्य	नि ध ध ध प प प म म म ग ग ग रि रि
मन्द्र	

तार		
मध्य	रि स स स	
मन्द्र		

तार	
मध्य	स स स स रि रि रि रि ग ग ग ग म म
मन्द्र	

तार	स
मध्य	म म प प प प ध ध ध ध नि नि नि नि
मन्द्र	

४९
तार सु सु सु सु सु सु सु
मध्य नि नि नि नि धु धु धु
मन्द्र
तार
मध्य धु पु पु पु पु मु मु मु मु गु गु गु गु रि रि
मन्द्र
तार
मध्य रि रि सु सु सु सु
मन्द्र
इति गात्रवर्ण

नबर ९.

तार	
मध्य	स स स रि रि रि रि ग ग ग ग म म म
मन्द्र	

तार	स स
मध्य	म प प प प ध ध ध ध नि नि नि नि
मन्द्र	

तार	
मध्य	नि नि नि नि ध ध ध ध प प प प म म म
मन्द्र	

तार	
मध्य	म ग ग ग ग रि रि रि रि स स स
मन्द्र	इति विहु.

नंबर. १०

तार	
मध्य	स स रि स रि ग स रि ग म स रि ग म
मन्द्र	

तार	
मध्य	प ऽ स रि ग म प ध स रि ग म प
मन्द्र	

तार	सु ऽ सु
मध्य	धु नि॒ • ४ सु रि गु मु पु धु नि
मन्द्र	

तार	
मध्य	नि धु पु मु गु रि सु ऽ नि धु पु मु गु रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	सु ० धु पु मु गु रि सु पं मु गु रि सु ॰
मन्द्र	

तार	
मध्य	मु गु रिु सु गु रिु सु रिु सु सु • ४
मन्द्र	इति हसित

नंबर ११

तार	
मध्य	सु रिु रिु गु गु मु मु पु पु धु धु निु निु
मन्द्र	

तार	सु सु
मध्य	निु निु धु धु पु पु मु मु गु गु रिु
मन्द्र	

तार		
मध्य	रिॢ सॢ	इति प्रेंखित
मन्द्र		

नवर १२.

तार	
मध्य	सु सु गु गु रि रि मु मु गु गु पु पु मु मु
मन्द्र	

तार	सु सु सु सु
मध्य	धु धु पु पु नि नि धु धु धु धु नि
मन्द्र	

तार	
मध्य	नि प प ध ध म म प प ग ग म म रि
मन्द्र	

तार		
मध्य	रि ग ग स स	इत्युक्ति
मन्द्र		

नंबर . १२

तार	
मध्य	स रि ग रि ग म ग म प म प ध प ध
मन्द्र	

तार	सु सु
मध्य	नि धु नि नि धु नि धु पु धु पु मु
मन्द्र	

तार		
मध्य	पु मु गु मु गु रि गु रि सु	
मन्द्र		

नंबर. १४

तार	
मध्य	सु सु रि गु रि रि गु मु गु गु मु पु
मन्द्र	

तार	सु सु
मध्य	मु मु पु धु पु पु धु नि धु धु नि
मन्द	

तार	
मध्य	नि धु धु नि धु पु पु धु पु मु मु पु
मन्द	

तार	
मध्य	मु गु गु मु गु रि रि गु रि सु सु
मन्द	इत्याभिमः

तार	
मध्य	स स स स रि रि ग म रि रि रि रि ग ग म प
मन्द्र	

नंबर १५

तार	
मध्य	ग ग ग ग म म प ध म म ग म प प ध नि प
मन्द्र	

तार	स स
मध्य	प प प ध ध नि नि ध ध प प प प नि ध
मन्द्र	

तार	
मध्य	प प स म स म ध प म म ग ग ग ग प म ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग रि रि रि रि म ग रि रि स स स स
मन्द्र	इत्युद्ग्राहितः

१६ नंबर

तार	
मध्य	स रि ग ग ग . ४ रि ग म म म . ४ ग म
मन्द्र	

तार	
मध्य	प प प • ऽ म प ध ध ध • ऽ प ध नि नि नि
मन्द्र	

तार	स स स • ऽ स स स
मध्य	• ऽ ध नि नि ध • ऽ
मन्द्र	

तार	
मध्य	नि नि नि ध प • ऽ ध ध ध प म • ऽ
मन्द्र	

तार	
मध्य	प़ प़ प़ म़ ग़ . ४ म़ म़ म़ ग़ रि़ . ४
मन्द्र	

तार		
मध्य	ग़ ग़ ग़ रि़ स़ . ४	इत्यासंगीताल्कार
मन्द्र		

नंबर. १७

तार	
मन्द्र	स़ रि़ ग़ म़ म़ ग़ रि़ स़ स़ रि़ ग़ रि़ म़ रि़ ग़ म़
मध्य	

तार																	
मन्द्र	रि	ग	म	प	ऽ	ग	ग	रि	रि	ग	म	ग	रि	ग	म	प	ग
मध्य																	

तार																	
मध्य	म	प	ध	ध	ऽ	ग	ग	ग	म	प	ग	ग	म	प	ध	म	प
मन्द्र																	

तार																	
मध्य	ध	नि	नि	ध	प	म	म	प	ध	प	म	प	ध	नि	प	ध	नि
मन्द्र																	

तार | सु सु   सु सु
मध्य | नि ध प प ध नि ऽ ऽ ध नि   नि ध प
मन्द्र |

तार | सु सुँ
मध्य | प नि ध प प ध नि   नि ध प नि ऽ ऽ ग प
मन्द्र

तार |
मध्य | ध प म म प ध नि नि ध प म ध प म म म प
मन्द्र |

तार	
मध्य	म ग ग म प ध ध प म ग प म गरि ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	म ग रि रि ग म प प म ग रि म ग रि स
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि ग रि स स रि ग म म ग रि स
मन्द्र	इतिमन्द्रादिः

नंबर १८

तार	
मध्य	स ग रि ग म ग रि ग रि ग रि स स रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग म रि म ग म प म ग म ग म ग रि रि
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग म प ग प म प ध प म प म प म ग ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	म प ध म ध प ध नि ध प ध प ध प म
मन्द्र	

तार	स
मध्य	म प ध नि प नि ध नि नि ध नि ध नि
मन्द्र	

तार	स स
मध्य	ध प प ध नि नि ध प प ध नि
मन्द्र	

तार	स
मध्य	ध नि ध नि नि ध नि प नि ध प म म
मन्द्र	

तार	
मध्य	प ध प ध प ध नि ध प ध म ध प म ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	ग म प म प म प ध प म प ग प म ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि रि ग म ग म ग म प म ग म रि स ग
मन्द्र	

तार	
मध्य	रि स स रि ग रि ग रि ग म ग रि ग स
मन्द्र	इति मन्द्रमध्यः

समाप्त